Azadi Ka Amrit Mahotsav

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का संबोधन

27 फरवरी 2022

सूचीक्रम

01 प्रधानमंत्री का संदेश (हिंदी) 01

02 प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख 15

2.1 सांस्कृतिक धरोहरों का पुनरुत्थान प्रतिस्थापित होती भारत की आस्था 17

2.2 किली पॉल और नीमा पॉल 21

2.3 सुरजन परोही 25

2.4 मराठी भाषा गौरव दिवस 28

2.5 सांस्कृतिक ज्ञान की वैश्विक पहचान आयुर्वेद 30

2.6 मिशन जल-थल 38

2.7 वोकल फॉर लोकल 41

03 प्रतिक्रियाएँ 45

मेरे प्यारे देशवासियों

'मन की बात' में फिर एक बार आप सबका स्वागत है।

आज 'मन की बात' की शुरूआत हम भारत की सफलता के ज़िक्र के साथ करेंगे। इस महीने की शुरूआत में भारत, इटली से अपनी एक बहुमूल्य धरोहर को लाने में सफल हुआ है। ये धरोहर है, अवलोकितेश्वर पद्मपाणि की हज़ार साल से भी ज्यादा पुरानी प्रतिमा। ये मूर्ति कुछ वर्ष पहले बिहार में गया जी के देवी स्थान कुंडलपुर मंदिर से चोरी हो गई थी। लेकिन अनेक प्रयासों के बाद अब भारत को ये प्रतिमा वापस मिल गई है। ऐसे ही कुछ वर्ष पहले तमिलनाडु के वेल्लूर से भगवान आंजनेय्यर, हनुमान जी की प्रतिमा चोरी हो गई थी। हनुमान जी की ये मूर्ति भी 600-700 साल पुरानी थी। इस महीने की शुरूआत में, ऑस्ट्रेलिया में हमें ये प्राप्त हुई, हमारे मिशन को मिल चुकी है।

साथियों,

हज़ारों वर्षों के हमारे इतिहास में, देश के कोने-कोने में एक-से-बढ़कर एक मूर्तियां हमेशा बनती रहीं, इसमें श्रद्धा भी थी, सामर्थ्य भी था, कौशल्य भी था और विविधताओं से भरा हुआ था और हमारे हर मूर्तियों के इतिहास में तत्कालीन समय का प्रभाव भी नज़र आता है।

ये भारत की मूर्तिकला का नायाब उदहारण तो थीं हीं, इनसे हमारी आस्था भी जुड़ी हुई थी। लेकिन, अतीत में बहुत सारी मूर्तियां चोरी होकर भारत से बाहर जाती रहीं। कभी इस देश में, तो कभी उस देश में ये मूर्तियां बेचीं जाती रहीं और उनके लिए वो तो सिर्फ़ कलाकृति थी। न उनको उसके इतिहास से लेना देना था, न श्रद्धा से लेना देना था। इन मूर्तियों को वापस लाना, भारत माँ के प्रति हमारा दायित्व है। इन मूर्तियों में भारत की आत्मा का, आस्था का अंश है।

इनका एक सांस्कृतिक-ऐतिहासिक महत्व भी है। इस दायित्व को समझते हुए भारत ने अपने प्रयास बढ़ाए। और इसका कारण ये भी हुआ कि चोरी करने की जो प्रवृति थी, उसमें भी एक भय पैदा हुआ। जिन देशों में ये मूर्तियां चोरी करके ले जाई गईं थीं, अब उन्हें भी लगने लगा कि भारत के साथ रिश्तों में soft power का जो diplomatic channel होता है उसमें इसका भी बहुत बड़ा महत्व हो सकता है।

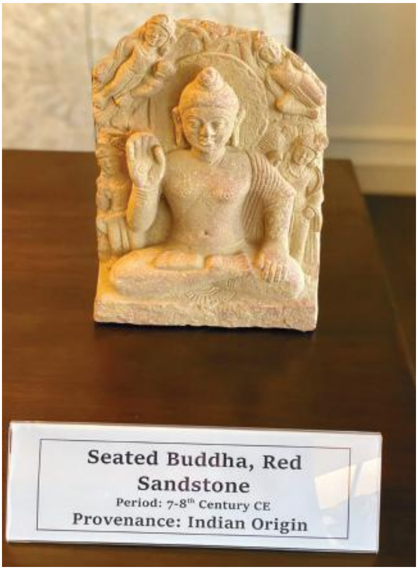

सांस्कृतिक धरोहरों का पुनरुत्थान प्रतिस्थापित होती भारत की आस्था

क्योंकि इसके साथ भारत की भावनाएँ जुड़ी हुई हैं, भारत की श्रद्धा जुड़ी हुई है, और, एक प्रकार से people to people relation में भी ये बहुत ताकत पैदा करता है। अभी आपने कुछ दिन पहले देखा होगा, काशी से चोरी हुई मां अन्नपूर्णा देवी की प्रतिमा भी वापस लाई गई थी। ये भारत के प्रति बदल रहे वैश्विक नजरिये का ही उदाहरण है। साल 2013 तक करीब-करीब 13 प्रतिमाएं भारत आयी थीं।

लेकिन, पिछले सात साल में 200 से ज्यादा बहुमूल्य प्रतिमाओं को, भारत, सफलता के साथ वापस ला चुका है। अमेरिका, ब्रिटेन, हॉलैंड, फ्रांस, कनाडा, जर्मनी, सिंगापुर, ऐसे कितने ही देशों ने भारत की इस भावना को समझा है और मूर्तियां वापस लाने में हमारी मदद की है। मैं पिछले साल सितम्बर में जब अमेरिका गया था, तो वहां मुझे काफी पुरानी-पुरानी कई सारी प्रतिमाएँ और सांस्कृतिक महत्व की अनेक चीजें प्राप्त हुई। देश की जब कोई बहुमूल्य धरोहर वापस मिलती है, तो स्वाभाविक है इतिहास में श्रद्धा रखने वाले, **archaeology** में श्रद्धा रखने वाले, आस्था और संस्कृति के साथ जुड़े हुए लोग, और एक हिन्दुस्तानी के नाते, हम सबको, संतोष मिलना बहुत स्वाभाविक है।

साथियों,

भारतीय संस्कृति और अपनी धरोहर की बात करते हुए मैं आज आपको 'मन की बात' में दो लोगों से मिलवाना चाहता हूं। इन दिनों फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम पर तंजानिया के दो भाई-बहन किलि पॉल और उनकी बहन नीमा ये बहुत चर्चा में हैं, और मुझे पक्का भरोसा है, आपने भी, उनके बारे में जरूर सुना होगा। उनके अंदर भारतीय संगीत को लेकर एक जुनून है, एक दीवानगी है और इसी वजह से वे काफी लोकप्रिय भी हैं। Lip Sync के उनके तरीके से पता चलता है कि इसके लिए वे कितनी ज्यादा मेहनत करते हैं।

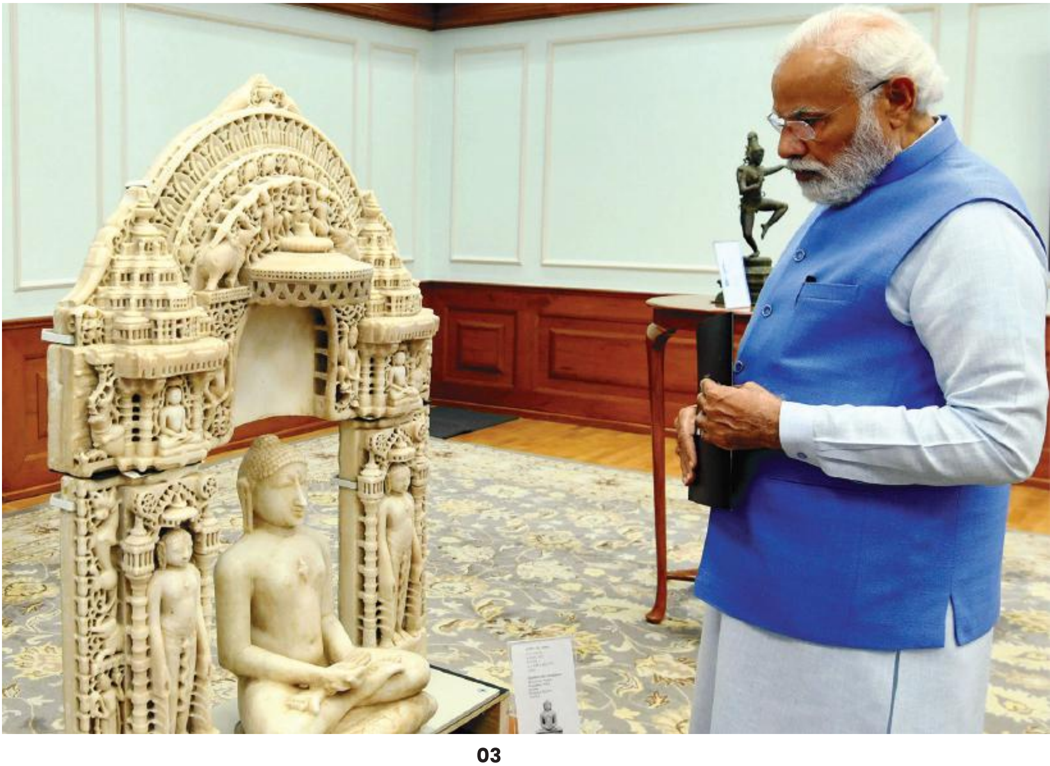

भारतीय संगीत का अफ्रीकी जूनून तंजानिया के Creative प्रशंसक

हाल ही में, गणतन्त्र दिवस के अवसर पर हमारा राष्ट्रगान 'जन गण मन' गाते हुए उनका वीडियो खूब वायरल हुआ था। कुछ दिन पहले उन्होंने लता दीदी का एक गाना गाकर उनको भावपूर्ण श्रद्धांजलि भी दी थी। मैं इस अद्‌भुत Creativity के लिए इन दोनों भाई-बहन किलि और नीमा उनकी बहुत सराहना करता हूं। कुछ दिन पहले तंजानिया में भारतीय दूतावास में इन्हें सम्मानित भी किया गया है। भारतीय संगीत का जादू ही कुछ ऐसा है, जो सबको मोह लेता है।

मुझे याद है, कुछ वर्ष पहले दुनिया के डेढ़ सौ से ज्यादा देशों के गायकों-संगीतकारों ने अपने-अपने देश में, अपनी-अपनी वेशभूषा में पूज्य बापू का प्रिय, महात्मा गाँधी का प्रिय भजन, 'वैष्णव जन' गाने का सफल प्रयोग किया था।

आज जब भारत अपनी आज़ादी के 75वाँ वर्ष का महत्वपूर्ण पर्व मना रहा है, तो देशभक्ति के गीतों को लेकर भी ऐसे प्रयोग किए जा सकते हैं। जहाँ विदेशी नागरिकों को, वहाँ के प्रसिद्ध गायकों को, भारतीय देशभक्ति के गीत गाने के लिये आमंत्रित करें। इतना ही नहीं अगर तंजानिया में किलि और नीमा भारत के गीतों को इस प्रकार से Lip Sync कर सकते हैं तो क्या मेरे देश में, हमारे देश की कई भाषाओं में, कई प्रकार के गीत हैं क्या हम कोई गुजराती बच्चे तमिल गीत पर करें, कोई केरल के बच्चे असमिया गीत पर करें, कोई कन्नड़ बच्चे जम्मू-कश्मीर के गीतों पर करें। एक ऐसा माहौल बना सकते हैं हम, जिसमें 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' हम अनुभव कर सकेंगे। इतना ही नहीं हम आजादी के अमृत महोत्सव को एक नए तरीके से जरूर मना सकते हैं। मैं देश के नौजवानों से आह्वान करता हूँ, आइए, भारतीय भाषाओं के जो popular गीत हैं उनपर आप अपने तरीके से video बनाइए, बहुत popular हो जाएंगे आप। और देश की विविधताओं का नयी पीढ़ी को परिचय होगा।

मेरे प्यारे देशवासियों

अभी कुछ दिन पहले ही, हमने, मातृभाषा दिवस मनाया। जो विद्वान लोग हैं, वो मातृभाषा शब्द कहाँ से आया, इसकी उत्पति कैसे हुई, इसे लेकर बहुत academic input दे सकते हैं।

मैं तो मातृभाषा के लिए यही कहूँगा कि जैसे हमारे जीवन को हमारी माँ गढ़ती है, वैसे ही, मातृभाषा भी, हमारे जीवन को गढ़ती है। माँ और मातृभाषा, दोनों मिलकर जीवन की foundation को मजबूत बनाते हैं, चिरंजीव बनाते हैं। जैसे, हम अपनी माँ को नहीं छोड़ सकते, वैसे ही, अपनी मातृभाषा को भी नहीं छोड़ सकते। मुझे बरसों पहले की एक बात याद है, जब, मुझे अमेरिका जाना हुआ, तो, अलग-अलग परिवारों में जाने का मौका मिलता था, कि एक बार मेरा एक तेलुगू परिवार में जाना हुआ और मुझे एक बहुत खुशी का दृश्य वहां देखने को मिला।

उन्होंने मुझे बताया कि हम लोगों ने परिवार में नियम बनाया है कि कितना ही काम क्यों न हो, लेकिन अगर हम शहर के बाहर नहीं हैं तो परिवार के सभी सदस्य dinner, table पर बैठकर साथ में लेंगे और दूसरा dinner की table पर compulsory हर कोई तेलुगू भाषा में ही बोलेगा। जो बच्चे वहाँ पैदा हुए थे, उनके लिए भी ये नियम था। अपनी मातृभाषा के प्रति ये प्रेम देखकर इस परिवार से मैं बहुत प्रभावित हुआ था।

साथियों, आज़ादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द में जी रहे हैं जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है, जबकि, विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और, हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती ये है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं - भाषा अनेक - भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएँ एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही है, एक दूसरे का विकास कर रही हैं। भारत में विश्व की सबसे पुरानी भाषा तमिल है और इस बात का हर भारतीय को गर्व होना चाहिए कि दुनिया की इतनी बड़ी विरासत हमारे पास है। उसी प्रकार से जितने पुराने धर्मशास्त्र हैं, उसकी अभिव्यक्ति भी हमारी संस्कृत भाषा में है।

भारत के लोग, करीब, 121, यानी हमें गर्व होगा 121 प्रकार की मातृभाषाओं से जुड़े हुए हैं और इनमे 14 भाषाएँ तो ऐसी हैं जो एक करोड़ से भी ज्यादा लोग रोजमर्रा की जिंदगी में बोलते हैं। यानी, जितनी कई यूरोपियन देशों की कुल जनसंख्या नहीं है, उससे ज्यादा लोग हमारे यहाँ अलग-अलग 14 भाषाओं से जुड़े हुए हैं। साल 2019 में, हिन्दी, दुनिया की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में तीसरे क्रमांक पर थी। इस बात का भी हर भारतीय को गर्व होना चाहिए।

भाषा, केवल अभिव्यक्ति का ही माध्यम नहीं है, बल्कि, भाषा, समाज की संस्कृति और विरासत को भी सहेजने का काम करती है। अपनी भाषा की विरासत को सहेजने का ऐसा ही काम सूरीनाम में सुरजन परोही जी कर रहे हैं। इस महीने की 2 तारीख को वो 84 वर्ष के हुए हैं। उनके पूर्वज भी बरसों पहले, हज़ारों श्रमिकों के साथ, रोजी-रोटी के लिए सूरीनाम गए थे। सुरजन परोही जी हिन्दी में बहुत अच्छी कविता लिखते हैं, वहां के राष्ट्रीय कवियों में उनका नाम लिया जाता है। यानी, आज भी उनके दिल में हिन्दुस्तान धड़कता है, उनके कार्यों में हिन्दुस्तानी मिट्टी की महक है। सूरीनाम के लोगों ने सुरजनपरोही जी के नाम पर एक संग्रहालय भी बनाया है। मेरे लिए ये बहुत सुखद है कि साल 2015 में मुझे उन्हें सम्मानित करने का अवसर मिला था।

साथियों,

आज के दिन, यानी, 27 फरवरी को मराठी भाषा गौरव दिवस भी है।

"सर्व मराठी बंधु भगिनिना मराठी भाषा दिनाच्या हार्दिक शुभेच्छा।"

ये दिन मराठी कविराज, विष्णु बामन शिरवाडकर जी, श्रीमान कुसुमाग्रज जी को समर्पित है। आज ही कुसुमाग्रज जी की जन्म जयंती भी है। कुसुमाग्रज जी ने मराठी में कवितायेँ लिखी, अनेकों नाटक लिखे, मराठी साहित्य को नई ऊँचाई दी।

साथियो, हमारे यहाँ भाषा की अपनी खूबियाँ हैं, मातृभाषा का अपना विज्ञान है। इस विज्ञान को समझते हुए ही, राष्ट्रीय शिक्षा नीति में, स्थानीय भाषा में, पढ़ाई पर जोर दिया गया है। हमारे Professional courses भी स्थानीय भाषा में पढ़ाए जाएँ, इसका प्रयास हो रहा है। आज़ादी के अमृत काल में इस प्रयासों को हम सब ने मिलकर के बहुत गति देनी चाहिये, ये स्वाभिमान का काम है।

मैं चाहूँगा, आप जो भी मातृभाषा बोलते हैं, उसकी खूबियों के बारे में अवश्य जानें और कुछ-ना-कुछ लिखें।

साथियों,

कुछ दिनों पहले मेरी मुलाकात, मेरे मित्र, और Kenya के पूर्व प्रधानमंत्री राइला ओडिंगा जी से हुई थी। ये मुलाकात, दिलचस्प तो थी ही लेकिन बहुत भावुक थी। हम बहुत अच्छे मित्र रहे तो खुलकर के काफी बातें भी कर लेते हैं।

जब हम दोनों बातें कर रहे थे, तो ओडिंगा जी ने अपनी बिटिया के बारे में बताया। उनकी बेटी Rosemary को Brain Tumour हो गया था और इस वजह से उन्हें अपनी बिटिया की Surgery करानी पड़ी थी। लेकिन, उसका एक दुष्परिणाम ये हुआ कि Rosemary की आंखों की रोशनी करीब-करीब चली गई, दिखाई देना ही बंद हो गया। अब आप कल्पना कर सकते हैं उस बेटी का क्या हाल हुआ होगा और एक पिता की स्थिति का भी हम अंदाज लगा सकते हैं, उनकी भावनाओं को समझ सकते हैं।

उन्होंने दुनियाभर के अस्पतालों में, कोई भी दुनिया का बड़ा देश ऐसा नहीं होगा, कि जहाँ उन्होंने, बेटी के इलाज़ के लिए, भरपूर कोशिश न की हो।

दुनिया के बड़े-बड़े देश छान मारे, लेकिन, कोई सफलता नहीं मिली और एक प्रकार से सारी आशायें छोड़ दी पूरे घर में एक निराशा का वातावरण बन गया। इतने में, किसी ने उनको, भारत में, आयुर्वेद के इलाज़ के लिए आने के लिए सुझाव दिया और वो बहुत कुछ कर चुके थे, थक भी चुके थे, फिर भी उनको लगा कि चलो भई एक बार try करें क्या होता है ? वे भारत आये, केरला के एक आयुर्वेदिक अस्पताल में अपनी बेटी का इलाज़ करवाना शुरू किया। काफी समय बेटी यहाँ रही। आयुर्वेद के इस इलाज़ का असर ये हुआ कि Rosemary की आंखों की रोशनी काफी हद तक वापस लौट आई।

आप कल्पना कर सकते हैं, कि, जैसे एक नया जीवन मिल गया और रोशनी तो Rosemary के जीवन में आई। लेकिन पूरे परिवार में एक नई रोशनी नई जिंदगी आ गई और ओडिंगा जी इतने भावुक हो करके ये बात मुझे बता रहे थे, कि उनकी इच्छा है, कि, भारत के आयुर्वेद का ज्ञान है विज्ञान है वो Kenya में ले जाए। जिस प्रकार के Plants इसमें काम आते हैं

भारतीय ज्ञान की बढ़ती प्रासंगिकता - आयुर्वेद के चमत्कार को नमस्कार

उन plant की खेती करेंगे और इसका लाभ अधिक लोगों को मिले इसके लिए वो पूरा प्रयास करेंगे।

मेरे लिए ये बहुत खुशी की बात है कि हमारी धरती और परंपरा से किसी के जीवन से इतना बड़ा कष्ट दूर हुआ। ये सुन करके आपको भी खुशी होगी।

कौन भारतवासी होगा जिसको इसका गर्व ना हो ? हम सभी जानते हैं कि ओडिंगा जी ही नहीं बल्कि दुनिया के लाखों लोग आयुर्वेद से ऐसे ही लाभ उठा रहे हैं।

ब्रिटेन के प्रिंस चार्ल्स भी आयुर्वेद के बहुत बड़े प्रशंसकों में से एक हैं। जब भी मेरी उनसे मुलाकात होती है, वो आयुर्वेद का जिक्र जरूर करते हैं। उन्हें भारत के कई आयुर्वेदिक संस्थाओं की जानकारी भी है।

साथियों, पिछले सात वर्षों में देश में आयुर्वेद के प्रचार-प्रसार पर बहुत ध्यान दिया गया है। आयुष मंत्रालय के गठन से चिकित्सा और स्वास्थ्य से जुड़े हमारे पारंपरिक तरीकों को लोकप्रिय बनाने के संकल्प को और मजबूती मिली है। मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि पिछले कुछ समय में आयुर्वेद के क्षेत्र में भी कई नए Start-up सामने आए हैं। इसी महीने की शुरूआत में Ayush Start-up Challenge शुरू हुआ था। इस Challenge का लक्ष्य, इस क्षेत्र में काम करने वाले Start-ups को identify करके उन्हें Support करना है। इस क्षेत्र में काम कर रहे युवाओं से मेरा आग्रह है, कि वे इस Challenge में जरूर हिस्सा लें।

साथियों,

एक बार जब लोग मिलकर के कुछ करने की ठान लें, तो वो अद्भुत चीजें कर जाते हैं। समाज में कई ऐसे बड़े बदलाव हुए हैं, जिनमें जन-भागीदारी सामूहिक प्रयास इसकी बहुत बड़ी भूमिका रही है। "मिशन जल थल" नाम का ऐसा ही एक जन-आंदोलन कश्मीर के श्रीनगर में चल रहा है। यह श्रीनगर की झीलों और तालाबों की साफ-सफाई और उनकी पुरानी रौनक लौटाने का एक अनोखा प्रयास है। "मिशन जल थल" का Focus "कुशल सार" और "गिल सार" पर है। जनभागीदारी के साथ-साथ इसमें Technology की भी बहुत मदद ली जा रही है। कहां-कहां अतिक्रमण हुआ है, कहां अवैध निर्माण हुआ है, इसका पता लगाने के लिए इस क्षेत्र का बाकायदा Survey कराया गया। इसके साथ ही Plastic Waste को हटाने और कचरे की सफाई का अभियान भी चलाया गया। मिशन के दूसरे चरण में पुराने Water Channels और झील को भरने वाले 19 झरनों को Restore करने का भी भरपूर प्रयास किया गया। इस Restoration Project के महत्व के बारे में अधिक से अधिक जागरूकता फैले, इसके लिए स्थानीय लोगों और युवाओं को Water Ambassadors भी बनाया गया। अब यहां के स्थानीय लोग "गिल सार लेक" में प्रवासी पक्षियों और मछलियों की संख्या बढ़ती रहे इसके लिए भी प्रयास कर रहे हैं और उसको देखकर खुश भी होते हैं। मैं इस शानदार प्रयास के लिए श्रीनगर के लोगों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

साथियों, आठ साल पहले देश ने जो '**स्वच्छ भारत मिशन**' शुरू किया, समय के साथ उसका विस्तार भी बढ़ता गया, नए-नए innovation भी जुड़ते गए। भारत में आप कहीं पर भी जाएंगे तो पाएंगे कि हर तरफ स्वच्छता के लिए कोई न कोई प्रयास जरूर हो रहा है। असम के कोकराझार में ऐसे ही एक प्रयास के बारे में मुझे पता चला है।

जन-भागीदारी से मन-बदलाव : जल-थल की स्वच्छता को समर्पित

"जल थल मिशन"

यहाँ Morning Walkers के एक समूह ने 'स्वच्छ और हरित कोकराझार' मिशन के तहत बहुत प्रशंसनीय पहल की है। इन सबने नए Flyover क्षेत्र में तीन किलोमीटर लम्बी सड़क की सफाई कर स्वच्छता का प्रेरक सन्देश दिया। इसी प्रकार विशाखापट्नम में **'स्वच्छ भारत अभियान'** के तहत polythene के बजाए कपड़े के थैलों को बढ़ावा दिया जा रहा है। यहाँ के लोग पर्यावरण को स्वच्छ रखने के लिए Single Use Plastic उत्पादों के खिलाफ अभियान भी चला रहे हैं। इसके साथ ही साथ ये लोग घर पर ही कचरे को अलग करने के लिए जागरूकता भी फैला रहेहैं। मुंबई के Somaiya College के Students ने स्वछता के अपने अभियान में सुन्दरता को भी शामिल कर लिया है। इन्होंने कल्याण रेलवे स्टेशन की दीवारों को सुन्दर पेंटिंग्स से सजाया है। राजस्थान के सवाई-माधोपुर का भी प्रेरक उदाहरण मेरी जानकारी में आया है। यहाँ के युवाओं ने रणथंभौर में **'Mission Beat Plastic'** नाम का अभियान चला रखा है। जिसमें रणथंभौर के जंगलों से Plastic और Polythene को हटाया गया है| सबका प्रयास की यही भावना, देश में जनभागीदारी को मजबूत करती है और जब जनभागीदारी हो तो बड़े से बड़े लक्ष्य अवश्य पूरे होते हैं।

'स्वच्छ और हरित कोकराझार' मिशन

मेरे प्यारे देशवासियों,

आज से कुछ दिन बाद ही, 8 मार्च को पूरी दुनिया में **'International Women's Day', 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस'** मनाया जाएगा। महिलाओं के साहस, कौशल, और प्रतिभा से जुड़े कितने ही उदाहरण हम 'मन की बात' में लगातार साझा करते रहे हैं। आज चाहे Skill India हो, Self Help Group हो, या छोटे बड़े उद्योग हो, महिलाओं ने हर जगह मोर्चा संभाला हुआ है। आप किसी भी क्षेत्र में देखिए, महिलायें पुराने मिथकों को तोड़ रही हैं। आज, हमारे देश में parliament से लेकर पंचायत तक अलग-अलग कार्य क्षेत्र में, महिलायें, नई ऊँचाई प्राप्त कर रही हैं। सेना में भी बेटियाँ अब नई और बड़ी भूमिकाओं में ज़िम्मेदारी निभा रही हैं, और, देश की रक्षा कर रही हैं। पिछले महीने गणतंत्र दिवस पर हमने देखा कि आधुनिक fighter planes को भी बेटियाँ उड़ा रही हैं। देश ने सैनिक स्कूलों में भी बेटियों के admission पर रोक हटाई, और पूरे देश में बेटियाँ सैनिक स्कूलों में दाखिला ले रही हैं। इसी तरह, अपने start-up जगत को देखें, पिछले सालों में, देश में, हजारों नए start-up शुरू हुए। इनमें से करीब आधे start-up में महिलायें निदेशक की भूमिका में हैं। पिछले कुछ समय में महिलाओं के लिए मातृत्व अवकाश बढ़ाने जैसे निर्णय लिए गए हैं।

बेटे और बेटियों को समान अधिकार देते हुए विवाह की उम्र समान करने के लिए देश प्रयास कर रहा है। इस से हर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। आप देश में एक और बड़ा बदलाव भी होते देख रहे होंगे! ये बदलाव है – हमारे सामाजिक अभियानों की सफलता। **'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'** की सफलता को ही लीजिए,

बदलता नजरिया और महिला उत्थान : सशक्त होती भारत की नारियाँ

आज देश में लिंग अनुपात सुधरा है। स्कूल जाने वाली बेटियों की संख्या में भी सुधार हुआ है। इसमें हमारी भी ज़िम्मेदारी है कि हमारी बेटियाँ बीच में स्कूल न छोड़ दें। इसी तरह, **'स्वच्छ भारत अभियान'** के तहत देश में महिलाओं को खुले में शौच से मुक्ति मिली है। ट्रिपल तलाक जैसे सामाजिक बुराई का अंत भी हो रहा है। जबसे ट्रिपल तलाक के ख़िलाफ़ क़ानून आया है देश में तीन तलाक के मामलों में 80 प्रतिशत की कमी आई है। ये इतने सारे बदलाव इतने कम समय में कैसे हो रहे हैं ? ये परिवर्तन इसलिए आ रहा है क्योंकि हमारे देश में परिवर्तन और प्रगतिशील प्रयासों का नेतृत्व अब ख़ुद महिलायें कर रहीं हैं।

मेरे प्यारे देशवासियों, कल 28 फरवरी को 'National Science Day' है। ये दिन Raman Effect की खोज के लिए भी जाना जाता है।

मैं सी.वी. रमन जी के साथ उन सभी वैज्ञानिकों को आदरपूर्वक श्रद्धांजलि देता हूँ, जिन्होंने हमारी Scientific Journey को समृद्ध बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। साथियों, हमारे जीवन में सुगमता और सरलता में technology ने काफी जगह बना ली है। कौन-सी technology अच्छी है, किस technology का बेहतर इस्तेमाल क्या है, इन सभी विषयों से हम भली-भांति परिचित होते ही हैं। लेकिन, ये भी सही है कि अपने परिवार के बच्चों को उस technology का आधार क्या है, उसके पीछे की science क्या है, इस तरफ हमारा ध्यान जाता ही नहीं है। इस Science Day पर मेरा सभी परिवारों से आग्रह है कि वो अपने बच्चों में Scientific Temperament विकसित करने के लिए जरूर छोटे-छोटे प्रयासों से शुरू कर सकते हैं अब जैसे दिखता नहीं है चश्मा लगाने के बाद साफ़ दिखने लगता है तो बच्चों को आसानी से समझाया जा सकता है कि इसके पीछे विज्ञान क्या है। सिर्फ़ चश्मे देखें, आनंद करें, इतना नहीं। अभी आराम से आप एक छोटे से कागज़ पर उसे बता सकते हैं। अब वो Mobile Phone उपयोग करता है, Calculator कैसे काम करता है, Remote Control कैसे काम करता है, Sensor क्या होते हैं ? ये Scientific बातें इसके साथ-साथ घर में चर्चा में होती है क्या ? हो सकती है। बड़े आराम से हम इन चीज़ों को घर की रोजमर्रा की ज़िन्दगी के पीछे क्या Science की वो कौन सी बात है जो ये कर रही है, इसको, समझा सकते हैं। उसी प्रकार से क्या कभी हमने बच्चों को लेकर के भी आसमान में एक साथ देखा है क्या ? रात में तारों के बारे में भी जरूर बातें हुई हों।

इनोवेशन और विज्ञान का भारत में भविष्य : आज की सुलभता, कल का संबल

विभिन्न तरह के constellations दिखाई देते हैं, उनके बारे में बताएं। ऐसा करके आप बच्चों में physics और astronomy के प्रति नया रुझान पैदा कर सकते हैं। आज कल तो बहुत सारी Apps भी हैं जिससे आप तारों और ग्रहों को locate कर सकते हैं, या, जो तारा आसमान में दिख रहा है उसको पहचान सकते हैं, उसके बारे में जान भी सकते हैं। मैं, अपने Start-ups को भी कहूँगा कि आप अपने कौशल और Scientific Character का इस्तेमाल राष्ट्र निर्माण से जुड़े कार्यों में भी करें। ये देश के प्रति हमारी Collective Scientific Responsibility भी है। जैसे आजकल मैं देख रहा हूँ कि हमारे Start-ups Virtual reality की दुनिया में बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। Virtual Classes के इस दौर में ऐसे ही एक Virtual lab बच्चों को ध्यान में रखते हुए बनाई जा सकती है। हम Virtual reality के द्वारा बच्चों को घर में बैठे chemistry की lab का अनुभव भी करा सकते हैं। अपने शिक्षकों और अभिभावकों से मेरा आग्रह है कि आप सभी विद्यार्थियों एवं बच्चों को सवाल पूछने के लिए प्रोत्साहित करें और उनके साथ मिलजुल कर सवालों का सही जवाब तलाशें। आज, मैं, कोरोना के ख़िलाफ़ लड़ाई में भारतीय वैज्ञानिकों की भूमिका की भी सराहना करना चाहूँगा। उनके कड़े परिश्रम की वजह से ही Made In India वैक्सीन का निर्माण संभव हो पाया, जिससे पूरी दुनिया को बहुत बड़ी मदद मिली है। Science का मानवता के लिए यही तो उपहार है।

मेरे प्यारे देशवासियों, इस बार भी हमने अनेक विषयों पर चर्चा की। आने वाले मार्च के महीने में अनेक पर्व–त्योहार आ रहे हैं - शिवरात्रि है और अब कुछ दिन बाद आप सब होली की तैयारी में जुट जाएंगे। होली हमें एक सूत्र में पिरोने वाला त्योहार है।

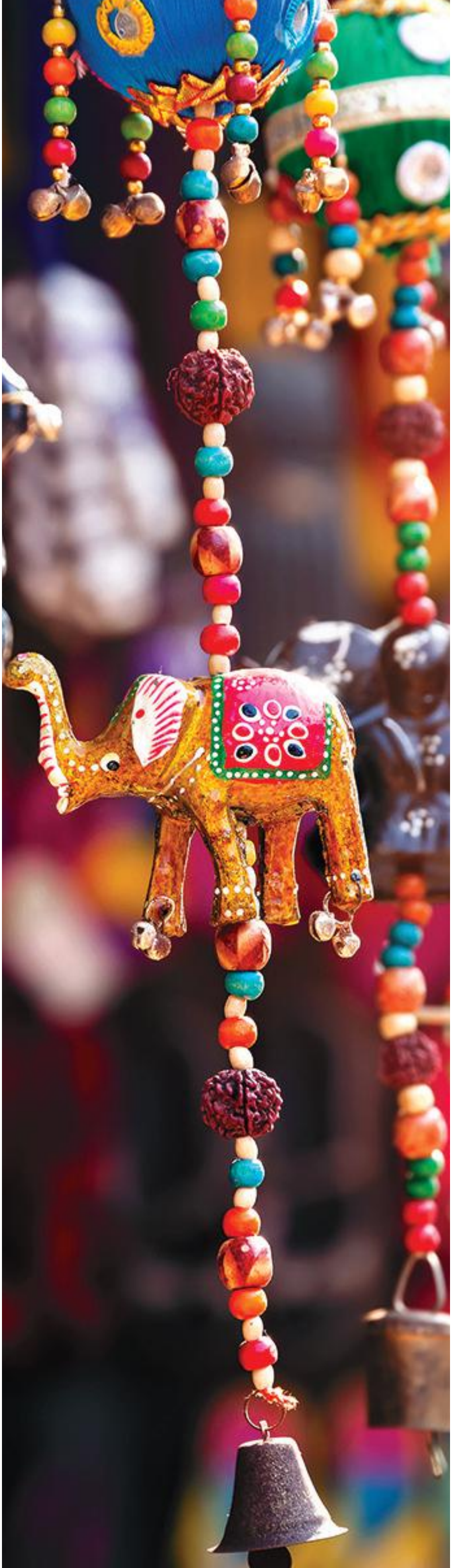

इसमें अपने–पराए, द्वेष–विद्वेष, छोटे–बड़े सारे भेद मिट जाते हैं। इसलिए कहते है, होली के रंगों से भी ज्यादा गाढ़ा रंग, होली के प्रेम और सौहार्द का होता है। होली में गुझिया के साथ-साथ रिश्तों की भी अनूठी मिठास होती है। इन रिश्तों को हमें और मजबूत करना है और रिश्ते सिर्फ़ अपने परिवार के लोगों से ही नहीं बल्कि उन लोगों से भी जो आपके एक वृहद् परिवार का हिस्सा है। इसका सबसे महत्वपूर्ण तरीका भी आपको याद रखना है। ये तरीका है – 'Vocal for Local' के साथ त्योहार मनाने का। आप त्योहारों पर स्थानीय उत्पादों की ख़रीदी करें, जिससे आपके आसपास रहने वाले लोगों के जीवन में भी रंग भरे, रंग रहे, उमंग रहे।

हमारा देश जितनी सफलता से कोरोना के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ रहा है, और, आगे बढ़ रहा है, उससे त्योहारों में जोश भी कई गुना हो गया है। इसी जोश के साथ हमें अपने त्योहार मनाने हैं, और साथ ही, अपनी सावधानी भी बनाए रखनी है।

मैं आप सभी को आने वाले पर्वों की ढेर सारी शुभकामनाएँ देता हूँ। मुझे हमेशा आपकी बातों का, आपके पत्रों का, आपके संदेशों का इंतज़ार रहेगा। बहुत बहुत धन्यवाद ।

VOCAL FOR LOCAL

मेक इन इंडिया से मेक फॉर वर्ल्ड : आत्मनिर्भर भारत का प्रमुख चरण

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

सांस्कृतिक धरोहरों का पुनरुत्थान

प्रतिस्थापित होती भारत की आस्था

> **“भारत, इटली से अपनी एक बहुमूल्य धरोहर को लाने में सफल हुआ है। ये धरोहर है, अवलोकितेश्वर पद्मपाणि की हज़ार साल से भी ज्यादा पुरानी प्रतिमा। ये मूर्ति कुछ वर्ष पहले बिहार में गया जी के देवी स्थान कुंडलपुर मंदिर से चोरी हो गई थी। लेकिन अनेक प्रयासों के बाद अब भारत को ये प्रतिमा वापस मिल गई है।”**
>
> **प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी**
> (मन की बात के अपने संबोधन में)

हमारी अनमोल धरोहरों को वापस प्राप्त कर पाना अतुल्य है, निश्चित रूप से संदेशों में परिवर्तन आ रहा है। मैं उस वार्ता का प्रत्यक्षदर्शी हूँ जहाँ भारतीय पक्ष ने यह पूर्णतः स्पष्ट कर दिया कि उनके लिये यह मात्र कलाकृति होगी किन्तु वे हमारे ईश्वरों की मूर्तियाँ हैं। यह हमारे लिए एक अत्यंत भावनात्मक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत है।

अमीश त्रिपाठी
साहित्यकार

भारत की सांस्कृतिक विरासत को संजोने, संरक्षित करने और उसका विकास करने में संलग्न संस्कृति मंत्रालय, सांस्कृतिक महत्व की वस्तुओं और स्थानों को विशिष्ट तवज्जो दिलवाने के लिये अथक प्रयास कर रहा है।

संस्कृति मंत्रालय ने हमारी कला, शिल्प के अनमोल नगीने और आततायों द्वारा नष्ट किए जाने से बच गईं निशानियों को सहेजने का कार्य तीव्र गति से किया है। इसी क्रम में संस्कृति मंत्रालय ने कला तस्करों द्वारा भारत से सैकड़ों वर्षों में निरंतर चोरी कर विदेश भेजी गई प्राचीन सांस्कृतिक और आस्था का केंद्र रही वस्तुओं को पुनः भारत लाने के प्रयासों को गति दी है। मंत्रालय के अनुसार “संस्कृति मंत्रालय उन प्राचीन वस्तुओं को वापस लाने के लिए विदेश मंत्रालय के साथ मिलकर काम कर रहा है, जिनकी विरासत का महत्व है और जिनका स्थानीय महत्व है। जिन लोगों से उनकी पैतृक विरासत छीन ली गई है, उन लोगों में विश्वास फिर से स्थापित किया जाएगा।”

इस माह के अपने मन की बात संबोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इन प्रयासों का उल्लेख किया और अपने संबोधन का आरम्भ ही एक शुभ सूचना से किया कि एक सदियों पुरानी विरासत हम पुनः प्राप्त कर रहे हैं जिसका नाम है अवलोकितेश्वर पद्मपाणि।

अवलोकितेश्वर पद्मपाणि

मोदी सरकार के शासनकाल में भारत से चोरी कर दूसरे देशों में ले जाई गई महत्वपूर्ण कृतियाँ देश में लगातार वापस लाई जा रही हैं। इसी क्रम में 11 फरवरी 2022 को 8वीं-12वीं सदी की 'अवलोकितेश्वर पद्मपाणि' भगवान की मूर्ति तस्करों से बरामद की गई है।

इसे इटली के मिलान में स्थित भारतीय वाणिज्यिक दूतावास को सौंप दिया गया है।

मूर्ति के मिलने पर भारतीय वाणिज्य दूतावास ने कहा कि देवीस्थान कुंडलपुर मंदिर, कुर्किहार (बिहार) में करीब 1200 सालों तक सुरक्षित रहने के बाद इस मूर्ति को वर्ष 2000 में चोरी कर लिया गया था। पत्थर की बनी अवलोकितेश्वर पद्मपाणि की यह मूर्ति 8वीं-12वीं सदी की है। मूर्ति में भगवान बुद्ध अपने बाएँ हाथ में कमल लिए खड़े हैं।

मूर्ति के मिलने की सूचना प्रधानमंत्री ने अपने फरवरी 2022 के 'मन की बात' संबोधन में भी साझा की।

स्थानीय निवासियों और इतिहासकारों का मानना है कि जब नालंदा विश्वविद्यालय अवस्थित था तो कुर्किहार कला एवं शिल्प का केंद्र हुआ करता था।

करीब 20-22 वर्ष पूर्व चोरी हुई इस मूर्ति के पाए जाने की सूचना से स्थानीय लोग अत्यंत हर्षित हैं।

2005 में विश्व मूर्तिकला प्रदर्शनी में भारत सरकार ने यहां की दो मूर्तियां भेजी थीं। स्थानीय ग्रामीण **प्रो. सुरेंद्र प्रसाद सिंह** कहते हैं कि कुर्किहार सिर्फ़ एक गाँव नहीं, इतिहास है, जिससे बुद्धकालीन और उससे प्राचीन इतिहास व किंवदंतियां भी जुड़ी हैं।

स्थानीय निवासी संजीव कुमार, भूषण सिंह, विभूति कुमार, साधुशरण सिंह, अनिल सिंह, अवध बिहारी आदि कहते हैं कि इस गढ़ की खोदाई होने से और भी बहुत चीजें सामने आ सकती हैं।

माँ अन्नपूर्णा

विभिन्न विद्वानों द्वारा भिन्न समय काल की मानी जाने वाली माता अन्नपूर्णा की ऐतिहासिक प्रतिमा लगभग 109 साल पहले चोरी हो गई थी। यह मूर्ति 1913 के करीब वाराणसी के अन्नपूर्णा मंदिर से चुरा ली गई थी और कनाडा की रेजिना यूनिवर्सिटी के मैकेंजी आर्ट गैलरी संग्रह का हिस्सा बन गई थी। यूनिवर्सिटी के कुलपति ने भूल सुधार करते हुए पिछले वर्षों में ओटावा में भारत के उच्चायुक्त अजय बिसारिया को यह मूर्ति सौंपी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इसकी शास्त्रोक्त विधि द्वारा पुनः प्राण प्रतिष्ठा की।

प्रो. सुमन जैन जो प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हैं, मानती हैं की अन्नपूर्णा माता को सदा काशी के वैभव से जोड़कर देखा गया है, और मान्यता है कि भगवान विश्वनाथ माता पार्वती के आग्रह पर काशी आये और माता पार्वती यहाँ अन्नपूर्णा स्वरूप में विराजी हैं।

ये बहुत ही ख़ुशी की बात है की काशी की समृद्धि के साथ साथ माननीय प्रधानमंत्री जी ने बहुत बड़ा उपाय किया है कि कनाडा से माँ अन्नपूर्णा की मूर्ति वापस लाकर काशी में पुनर्स्थापित किया।

आनन्द त्यागी
कुलपति, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ

यह मूर्ति 108 वर्ष पूर्व घाट से चोरी हो गई थी। हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री के प्रयास से ये मूर्ति वापस आई है।

पुजारी अमरनाथ उपाध्याय
काशी विश्वनाथ मंदिर

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के ही प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग से जुड़ी **डॉ मीनाक्षी सिंह** मानती हैं की काशी की आस्था का केंद्र सदा बाबा विश्वनाथ और माता अन्नपूर्णा दोनों ही रहे हैं। काशी विश्वनाथ मंदिर के **पुजारी अमरनाथ उपाध्याय** तो माँ अन्नपूर्णा की पुनर्स्थापना से भावविह्वल हो चुके हैं।

भारत की सांस्कृतिक विरासतों की पुनर्स्थापना से लाखों श्रद्धालु आस्था के सागर में गोते लगा रहे हैं और निरंतर पूजार्चन में संलिप्त हैं।

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के **कुलपति आनन्द त्यागी** माँ अन्नपूर्णा और उनके साथ जुड़ी मान्यताओं को बल देते हैं। उनका मानना है कि काशी क्षेत्र में कोई भी भूखा नहीं सो सकता ये मान्यता है और इस मान्यता को पूरा करने के लिये जो लोग लगे हैं उनकी आस्था का केंद्र माँ अन्नपूर्णा ही हैं।

इस प्रकार विभिन्न सांस्कृतिक, शिल्प एवं आस्था के महत्व की कलाकृतियों का निरंतर भारत वापसी के लिये जारी प्रयास जनता द्वारा अत्यंत सराहे जा रहे हैं।

> ये काशी नगरी धन्य हो गयी है, माननीय प्रधानमंत्री जी को हम सभी का बहुत धन्यवाद की माँ अन्नपूर्णा जी को काशी में स्थापित किया और देश की धरोहर को विश्व के कोने कोने से देश में लाने का संकल्प लिया है।
>
> **डॉ. मीनाक्षी सिंह**
> काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

किली पॉल और नीमा पॉल

(Kili Paul & Neema Paul)

"हाल ही में, गणतन्त्र दिवस के अवसर पर हमारा राष्ट्रगान 'जन गण मन' गाते हुए तंजानिया की दो भाई-बहन किलि पॉल और उनकी बहन नीमा का वीडियो खूब वायरल हुआ था। कुछ दिन पहले उन्होंने लता दीदी का एक गाना गाकर उनको भावपूर्ण श्रद्धांजलि भी दी थी। मैं इस अद्भुत Creativity के लिए इन दोनों भाई-बहन किलि और नीमा उनकी बहुत सराहना करता हूं।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(मन की बात के अपने संबोधन में)

भारत निष्कपट और निश्वार्थ हृदयी लोगों का देश है। भारतीय यदि एक बार आपको पसंद करने लगते हैं तो उनके मन में वर्ग, देश, स्तर जैसी बातें नहीं आती हैं और यही बात भारत को विशिष्ट बनाती हैं।

किली पॉल

आपका प्रेम आपको किन ऊँचाइयों तक पहुँचा सकता है उसका स्पष्ट उदाहरण है किली पॉल और नीमा पॉल।

भारत से सैकड़ों किलोमीटर दूर पूर्वी अफ्रीकी देश तंजानिया के इस भाई- बहन ने शायद ही कभी सोचा होगा की भारत जैसे बड़े देश के प्रधानमंत्री अपने भाषण में उन्हें शामिल करेंगे।

और कल्पना में भी न आने वाली ये बात सत्य बनी जब फरवरी 2022 के अपने मासिक संबोधन 'मन की बात' में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारतीय संस्कृति और भाषा गौरव के विषय पर चर्चा के दौरान किली और नीमा का विशेष उल्लेख किया। तंजानिया की प्रसिद्ध मसाई (maasai) संस्कृति से सम्बद्ध रखने वाले किली और नीमा सोशल मीडिया के इस दौर में विभिन्न सोशल प्लेटफ़ॉर्मस् पर अपने बॉलीवुड प्रेम के कारण कुछ दिनों पहले ही चर्चा में आये और एक भारतीय गाने पर बने अपने एक वीडियो के वायरल होने पर रातों-रात इन्टरनेट सेंसेशन बन गए।

किली और नीमा तंजानिया की आर्थिक राजधानी **दार-एस-सलाम (Dar es Salaam)** के बाहरी इलाके में रहते हैं और पेशे से किसान हैं।

कुछ ही समय पहले ही तंजानिया के किली और नीमा पॉल ने गणतंत्र दिवस के अवसर पर हमारे राष्ट्रगान "जन गण मन..." पर लिप-सिंक के माध्यम से एक वीडियो बनाकर भारत और भारतीयों के प्रति अपना सम्मान प्रदर्शित किया था। तंजानिया में भारत के उच्चायुक्त बिनय प्रधान द्वारा किली पॉल का अभिनंदन किया गया।

इंटरनेट पर जहां लाखों लोग उनके बॉलीवुड गानों के लिप-सिंक विडियोज बहुत पसंद कर रहे हैं, वहीं ऐसी भाषा जो उन्हें समझ नहीं आती, उसके लिए की गई पॉल भाई-बहन की मेहनत दिखाई देती है।

> हमें प्यार देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। भारत हम आपको निराश नहीं करेंगे और आपके लिए निरंतर अच्छे से अच्छा करने का प्रयत्न करेंगे।
>
> **किली पॉल**

भारतीय संगीत के प्रति उनका अनुराग ही है, जिसने शायद उन्हें इतनी जल्दी एक सुपर स्टार बना दिया है।

प्रधानमंत्री के उल्लेख के बाद इंटरनेट पर हर ओर छा चुके दोनों भाई बहन अभी भी हतप्रभ हैं। एक अफ्रीकन समाचार एजेंसी को दिए गए इंटरव्यू में किली ने बताया कि वो बचपन से ही बॉलीवुड मूवीज और संगीत के प्रशंसक रहे हैं।

उन्होंने मात्र मनोरंजन के उद्देश्य से ऐसे वीडियो बनाने आरंभ किए थे। उन्हें ये आशा ही नहीं थी की उन्हें इन्टरनेट पर इतना पसंद किया जायेगा।

किसी भी गाने पर वीडियो बनाने से पहले कम से कम दो दिन वो उसके बोलों का अभ्यास करते हैं। इतनी मेहनत के पीछे वे कहते हैं "जब आप कुछ करना पसंद करते हैं तो उसे सीखना बहुत ही सहज हो जाता है।

26 वर्षीय किली और 23 वर्षीय नीमा अपने वीडियोज में मसाई संस्कृति के कपड़े पहने दिखाई देते हैं। जीवनयापन के लिये पशुपालन और खेती जैसे पैतृक कार्य कर रहे दोनों भाई बहन एक साधारण परिस्थिति से आते हैं।

नीमा तो कहती हैं की किली के संगीत प्रेम को इस बात से ही समझा जा सकता है की उनके गांव में बिजली नहीं है और किली को फ़ोन चार्ज करने के लिये रोजाना पास के नगर लुगोबा जाना पड़ता है।

लेकिन उसके बाद भी उनका जोश दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है।

भारतीय उच्चायुक्त बिनय प्रधान किली पॉल को प्रशस्तिपत्र प्रदान करते हुए

किली और नीमा पॉल से खास बातचीत

तंजानिया के एक छोटे से गाँव मे रहने वाले दोनों भाई-बहन किली और नीमा पॉल ने जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा मन की बात में अपना जिक्र सुना तो ये आश्चर्यचकित रह गए और जब तंजानिया में भारतीय उच्चायुक्त ने उन्हें प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया तो ये उनके जीवन का वो लम्हा था जिसे वो शब्दों में प्रकट कर पाने में असमर्थ थे।

भारत के प्रधानमंत्री द्वारा उनकी प्रशंसा करना और इस सम्मान का मिलना उनके लिए अकल्पनीय सा था। किली कहते हैं कि भारत निष्कपट और निश्वार्थ-हृदय लोगों का देश है। भारतीय यदि एक बार आपको पसंद करने लगते हैं तो उनके मन में वर्ग, देश, स्तर जैसी बातें नहीं आती हैं और यही तो महानता है भारत की। किली के अनुसार प्रधानमंत्री जो इतने बड़े देश के मुखिया हैं जब वे एक साधारण व्यक्ति के बारे में बात कर रहे हैं तो ये अपने आप में बहुत बड़ी बात है। इसीलिए किली शीघ्र ही प्रधानमंत्री जी को अपनी शैली में धन्यवाद देने वाले हैं।

अपने बचपन से ही भारतीय फिल्मों और संगीत के साथ जुड़ाव रखने वाले किली एक्शन फिल्मों के दीवाने हैं।

इंटरव्यू में उन्होंने कुछ हाल की फिल्मों के संवाद भी अपनी शैली में बोले।

किली ने जब बचपन की दीवारें लांघी और बड़े हुए तब उन्हें ज्ञात हुआ कि उनके पसंदीदा गीत वो अभिनेता नहीं गाते जिनपर यह फिल्माया गया होता है, वो तो बस लिप-सिंक करते हैं, और इसी से प्रेरित होकर उन्होंने लिप-सिंक वीडियो बनाना शुरू किया।

30 लाख से अधिक प्रशंसकों तक पहुंच बना चुके किली और नीमा की मेहनत का अंदाजा इस बात से ही लगाया जा सकता है, कि जब किली से यह प्रश्न किया गया कि उनके परिवार, मित्र और पड़ोसी उनकी इस प्रसिद्धि को कैसे देखते हैं तो किली का उत्तर आश्चर्यचकित कर देने वाला था।

किली के अनुसार उनके समाज में लोगों के पास स्मार्टफ़ोन नहीं हैं, न ही वे इंटरनेट में रुचि रखते हैं। मसाई सभ्यता के लोग पशुपालन आधारित जीवन जीते हैं और अपने छोटे से संसार में रहते हैं, शेष विश्व में क्या हो रहा है वो उसपर ध्यान नहीं देते।

ऐसी परिस्थिति में किली के जुनून को सच कर पाने की जद्दोजहद क्या रही होगी इसे भली भांति समझा जा सकता है।

भारतीयों के लिए अपने सन्देश में किली कहते हैं, " हमें प्यार देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। हम आपके लिए निरंतर अच्छे से अच्छा करने का प्रयत्न करेंगे।"

> प्रधानमंत्री जो इतने बड़े देश के मुखिया हैं जब वे एक साधारण व्यक्ति के बारे में बात कर रहे हैं तो ये अपने आप में बहुत बड़ी बात है।
>
> **किली पॉल**

किली और नीमा पॉल की पूरी बातचीत सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें

सुरजन परोही

(Soerdjan Parohi)

"अपनी भाषा की विरासत को सहेजने का ऐसा ही काम सूरीनाम में सुरजन परोही जी कर रहे हैं। सुरजन परोही जी हिन्दी में बहुत अच्छी कविता लिखते हैं, वहां के राष्ट्रीय कवियों में उनका नाम लिया जाता है। यानी, आज भी उनके दिल में हिन्दुस्तान धड़कता है, उनके कार्यों में हिन्दुस्तानी मिट्टी की महक है। सूरीनाम के लोगों ने सुरजन परोही जी के नाम पर एक संग्रहालय भी बनाया है।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(मन की बात के अपने संबोधन में)

मुझे बहुत गर्व है की हम यहां सूरीनाम देश मे भारतीय संस्कृति को जीवित रखे हैं। हमारे पूर्वजों ने पूर्व हिंदी भाषा, अवधी, मैथिली, भोजपुरी को लेकर उन्होंने डच और टाकी टाकी मिलाकर एक सराननी भाषा भी बनाई है जिससे हम वार्तालाप भी करते हैं।

संदीप उमराव
सदस्य, सूरीनाम हिंदी परिषद

श्री सुरजन परोही भारत से सुदूर के दक्षिणी अमेरिकी महाद्वीप में स्थित देश सूरीनाम में हिंदी का प्रसार कर रहे ख्यातिलब्ध कवि एवं रचनाकार हैं।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री सुरजन परोही जी सूरीनाम के एक प्रसिद्ध कुम्हार भी हैं। उन्होंने अनेकों कविताएं, किताबें, नाटकों की रचना के साथ-साथ उनका स्वयं निर्देशन किया है।

उनके द्वारा लिखे गए गीत भारतीय मूल के सूरीनामियों के मध्य अत्यंत लोकप्रिय हैं। वह सरनामी, हिंदी, डच और सरनन टोंगो भाषाओं में समान कौशल के साथ कविताएं लिखने में माहिर हैं।

कई प्रदर्शिनियों में सहभागी रहकर अपनी कला का प्रदर्शन करने वाले परोही जी ने अपनी उपलब्धियों के लिए दर्जनों पुरस्कार प्राप्त किए हैं। राष्ट्रीय जागरुकता और सभी सूरीनामियों की एकता जैसे उनके प्रिय विषय जिन पर उन्होंने सरनन टोंगो, डच, हिंदी और सरनामी के मिश्रण में कविता और नाटक लिखे हैं, जनता द्वारा अत्यंत सराहे गए हैं।

उनकी कविता के माध्यम से हम स्पष्ट देख सकते हैं कि उनका भारत और यहाँ की संस्कृति से जुड़ाव उनकी कविताओं में कैसे प्रदर्शित होता है। सूरीनाम में हिंदी को जीवंत रखते हुए, श्री परोही जी ने हिंदू परंपराओं और हिंदी भाषा की सूरीनाम में प्रासंगिकता बनाए रखने में एक प्रमुख भूमिका निभाई है।

साहित्य में उनके योगदान के लिए उन्हें सूरीनाम और अन्य देशों में 50 से अधिक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। दिनांक 30 जनवरी 2022 को सूरीनाम हिंदी परिषद और विद्या निवास साहित्य संस्थान सूरीनाम ने एक समारोह में उनका अभिनंदन करते हुए सूरीनाम में भारत के राजदूत श्री शंकर बालचंद्रन के माध्यम से "संस्कृति रतन सम्मान" पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

श्री सुरजन परोही जी ने अपने घर का नाम "हस्तिनापुर" रखा है जो कुरुवंश की राजधानी थी और महाभारत' की कथा इसके परितः ही लिखी गई थी। ये भारतीय संस्कृति और अपने मूल के प्रति उनके आकर्षण को दर्शाता है।

1895 में श्री परोही के दादा जी भारत के एक अप्रवासी के रूप में सूरीनाम आए थे और आज सुरजन परोही के शब्द भारत और सूरीनाम लोगों के मध्य एक सेतु का निर्माण कर रहे हैं।

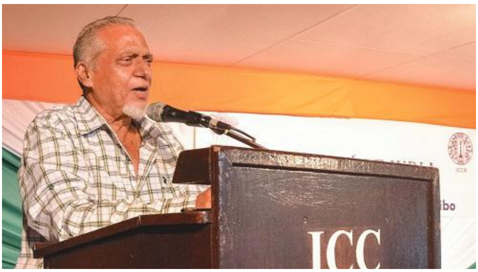

प्रधानमंत्री को धन्यवाद देते हुए सुरजन परोही की एक कविता।

“ मैं महामहिम दूतावास और
भारत के प्रधानमंत्री को धन्यवाद देता हूँ।

ये सदयुग द्वापर त्रेता नही, कलयुग है
यहां न गंगा जमुना सरस्वती त्रिवेणी है,
न हिमालय की चोटी है
यहां न रामकृष्ण का अवतार हुआ है,
न ऋषि मुनि का जन्म हुआ है,
ये पूरब नही ये पश्चिम है
यह भारत नही यह देश सूरीनाम है
हमारे पूर्वज भारत से आये हैं
उनका एक बूंद में लेकर
बोल रहा हूँ बता रहा हूँ,
मेरा अपना कुछ नही
जो मैंने पढ़ा है, सुना है, देखा है,
वही दोहरा रहा हूँ
संत कबीर की वाणी है,
यह झीनी चदरिया प्रभु आपने बीनी है,
मैं इसे बेदाग लौटा रहा हूँ,
मेरा अपना है कुछ नही।
धन्यवाद के पात्र है देने वाले
मैं भिखारी हूँ, लेता गया,
और आप दानवीर है देते गए
इतना सम्मान मुझे मिला है,
देते देते मुझे समुंदर बना दिया है,
समुंदर किसी की प्यास बुझा नही सकता।
अगर कुआं रहता तो किसी की प्यास बुझाता

आप सब को धन्यवाद है, आपका
सीधा-साधा सेवक, सुरजन पुरोही, नमस्ते। ”

सुरजन परोही की कविता सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें

श्री सुरजन परोही के 84वें जन्मदिन के अवसर पर सूरीनाम में भारत के राजदूत शंकर बालचंद्रन ने 2 फरवरी 2022 को श्री परोही की मूर्ति का अनावरण कर 'सुरजन परोही संग्रहालय' का उद्घाटन किया।

SOERDJAN PAROHI
Museum

सनातम धर्म के मूल सिद्धांत सूरीनाम में अभी तक जिंदा हैं। इसका सबसे बड़ा पुष्टिकरण यह है की भगवान श्री राम चन्द्र जी की मर्यादाओं का प्रतिपालन करने वाले, बहुत आदर के योग्य, भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सूरीनाम देश के राष्ट्रकवि श्रद्धेय सुरजन परोही जी को अपने मुखारबिंद से, उनकी अनेकानेक काव्य, नाट्य, साहित्यिक आदि रचनाओं और धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कृत्यों के लिए सम्मान प्रकट किया।

पंडित नितिन जगबंधन
सभापति श्री सनातन धर्म महासभा, सूरीनाम

भारतीय चलचित्र और आकाशवाणी द्वारा सूरीनाम के बहुत लोग हिंदी समझते और सीखते हैं। इसलिए हिंदी सूरीनाम में अभी भी जीवंत है

शर्मिला रामरतन
निवासी, सूरीनाम

मराठी भाषा गौरव दिवस

"साथियों, आज के दिन, यानी, 27 फरवरी को मराठी भाषा गौरव दिवस भी है।

"सवव मराठी बंधु भगगथनना मराठी भाषा दिनाच्या हार्दिक शुभेच्छा।"

ये दिन मराठी कविराज, विष्णु बामन शिरवाडकर जी, श्रीमान कुसुमाग्रज जी को समर्पित है। आज ही कुसुमाग्रज जी की जन्म जयंती भी है। कुसुमाग्रज जी ने मराठी में कवितायेँ लिखी, अनेकों नाटक लिखे, मराठी साहित्य को नई ऊँचाई दी।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

(मन की बात के अपने संबोधन में)

भाषा और सांस्कृतिक साम्य और वैभिन्य के मध्य समन्वय की अद्वितीय कड़ी है भारत।

भारत में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में शीर्ष है हिंदी तो लगभग 7.1 प्रतिशत लोगों की पहली पसंद है मराठी भाषा।

जिस प्रकार हिंदी को गौरव को प्रदर्शित करने के लिये मनाया जाता है हिंदी दिवस, उसी प्रकार मराठी भाषा के महत्व को जनमानस तक पहुँचाने के लिये मनाया जाता है 'मराठी भाषा गौरव दिवस'।

मराठी भाषा का अधिक से अधिक प्रसार हो और इसके गौरव व सम्मान को सदियों तक बरकरार रखने के लिए ही हर वर्ष 27 फरवरी को मराठी भाषा दिवस मनाया जाता है।

मराठी भाषा के सांस्कृतिक और साहित्यिक प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले वरिष्ठ मराठी कवि **विष्णु वामन शिरवाडकर 'कुसुमाग्रज' जी** के जन्मदिन पर मराठी भाषा गौरव दिवस की शुरुआत की गई।

मराठी क्षेत्र में संस्कृति एवं भाषा के प्रसार में अभूतपूर्व योगदान देने वाले कवि कुसुमाग्रज जी ने मराठी विस्तार हेतु अथक प्रयास किए हैं।

वे एक प्रख्यात मराठी कवि, नाटककार, उपन्यासकार, लघु कथाकार और मानवतावादी थे। उन्होंने कविताओं के 16 खंड, तीन उपन्यास, लघु कथाओं के आठ खंड, निबंध के सात खंड, 18 नाटक और छह एकांकी लिखे, जो सभी स्वतंत्रता, न्याय और गरीबी जैसी सामाजिक विषयों पर केंद्रित थे। उनके साहित्यिक योगदान के लिये उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है।

1999 में उनके निधन के पश्चात उनकी स्मृति में 2013 से उनका जन्म दिवस 27 फरवरी मराठी भाषा गौरव दिवस के रूप में मनाया जाता है।

मराठी साहित्यकार रेखा भंडारे ने कुसुमाग्रज जी पर अपने विचार साझा किए।

मराठी साहित्य के क्षेत्र में श्रद्धेय विष्णु वामन शिरवाडकर "कुसुमाग्रज जी" का बहुत बड़ा योगदान रहा है। मराठी साहित्य में उनकी प्रतिष्ठा पितामह की तरह है। उनके साहित्य की नींव मानवीय मूल्यों पर आधारित थी। वो जितने श्रेष्ठ रचनाकार थे, उतने ही श्रेष्ठ मनुष्य थे। उनके भीतर की इसी मनुष्यता ने, इसी मानवता ने उन्हें प्रणम्य बना दिया था। विलक्षण, तेजस्वी, ऊर्जावान प्रतिभा के वे धनी थे। 50 से ज्यादा किताबें उन्होंने लिखी है। साहित्य के सभी प्रकारों में उनका योगदान बहुत बड़ा है। काव्य, नाटक, कहानी, उपन्यास, ललित-निबंध, समीक्षा, व्यक्ति दर्शन, पत्रकारिता, भाषा विचार, साहित्य विचार इन सब प्रकारों में इनका योगदान अद्वितीय है। मानवता के कवि के रूप में और प्रखर राष्ट्रीय भावनाओं को ओतप्रोत, ऐसी काव्य रचना करने में मराठी साहित्य में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व साहित्य में भी उनका एक विशेष स्थान सुनिश्चित किया है। उनकी लिखी कविताएं और नाटकों को समाज के गहरे तक प्रभावित किया है। शब्द की शक्ति को उन्होंने समझा और समाज को भी समझाया।

हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने कुछ ही दिनों पहले कुसुमाग्रज जी के बारे में अपने मन की बात कही। मानवता और समाज के प्रति संवेदनशीलता, ये गुण इन दोनो महानुभावों में एक जैसे देखने को मिले हैं। ये जो बात है मुझे ये अनोखा संयोग लगता है। श्रद्धेय कुसुमाग्रज जी के बारे में उनके शब्द सुनकर मराठी नागरिक होने के नाते मुझे गौरव होता है।

रेखा भंडारे
साहित्यकार

सांस्कृतिक ज्ञान की वैश्विक पहचान

आयुर्वेद

"ओडिंगा जी मुझे बता रहे थे कि उनकी इच्छा है कि भारत के आयुर्वेद का ज्ञान है, विज्ञान है वो Kenya में ले जाए। जिस प्रकार के Plants इसमें काम आते हैं उन plant की खेती करेंगे और इसका लाभ अधिक लोगों को मिले इसके लिए वो पूरा प्रयास करेंगे।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(मन की बात के अपने संबोधन में)

विश्व की सबसे प्राचीन, गहन और गूढ़ है भारतीय संस्कृति। इसका प्रचुर ज्ञान और जीवन-शैली आज भी पाश्चात्य वर्ग के लिये एक रहस्य बनी हुई है।

भारतीय ज्ञान की प्रसिद्धि का इस बात से ही अंदाजा लगाया जा सकता है की हमारे शैक्षिक केन्द्रों पर विश्व भर से विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। और इसी ज्ञान की खान का अनमोल रत्न है स्वास्थ्य की रक्षा करने वाला "आयुर्वेद"।

आयुः+वेद इन दो शब्दों के मिलने से बने आयुर्वेद शब्द का अर्थ है "जीवन विज्ञान"। आयुर्वेद का विकास विभिन्न वैदिक मंत्रों से हुआ है, जिनमें संसार तथा जीवन, रोगों तथा औषधियों के मूल तत्व/दर्शन का वर्णन किया गया है।

आदि ऋषि वाग्भट्ट, सुश्रुत, च्यवन, चरक इत्यादि द्वारा संजोये गए ज्ञान को भारत में रोगों के उपचार से लेकर स्वस्थ्य लोकोपचार तक के लिये प्रयोग किया गया।

इसी क्रम में आयुर्वेदिक चिकित्सा की अद्वितीयता का अनुभव किया है इस बार **केन्या के पूर्व प्रधानमंत्री राइला ओडिंगा जी की पुत्री रोजमैरी ओडिंगा** ने। 2017 में ऑप्टिक नर्व की एक बीमारी से ग्रसित होने के कारण रोजमैरी ओडिंगा को अपनी सर्जरी करवानी पड़ी थी। उस सर्जरी के बाद उनकी दृष्टिक्षमता पर काफी प्रभाव पड़ा और उनकी इस स्थिति से उनका पूरा परिवार चिंतित हो गया।

इस दृष्टिदोष को दूर करने के लिये रोजमैरी ने विश्व के कई चिकित्सकीय रूप में उन्नत देशों में चिकित्सा प्राप्त की, किन्तु उन्हें लाभ प्राप्त नहीं हुआ।

*रोजमैरी मानती हैं कि जब वे 2019-20 में चिकित्सा के लिये भारत के **'श्रीधरीयम आयुर्वेदिक नेत्रालय एवं शोध संस्थान'** आईं तो वे अत्यंत हताश थीं। अन्य स्थानों से मिले परिणामों ने उनका मनोबल गिरा दिया था। केरल के एर्नाकुलम जिले के कुथाट्टूकुलम में स्थित इस आयुर्वेदिक नेत्रालय ने न सिर्फ रोजमैरी के मनोबल को जगाया बल्कि कुछ ही सप्ताह की चिकित्सा में उनकी आँखों की रोशनी लौट आई। इससे उनके समूचे परिवार की ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा।*

उनके पिता राइला ओडिंगा जी तो उसी समय से आयुर्वेदिक चिकित्सा के कायल हो गए और 'श्रीधरीयम' की एक शाखा केन्या में खोलने का अनुरोध भी कर गए।

वर्तमान में प्रधानमंत्री से चर्चा के बाद केन्या के समाचार सूत्र मानते हैं की राइला ओडिंगा जी आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति और औषधियों का लाभ केन्या की जनता को भी देना चाहते हैं और इसके लिये प्रयासरत हैं ताकि वहां की जनता भी भारत के इस प्राचीन, सहज और साइड-इफ़ेक्ट मुक्त चिकित्सा ज्ञान का लाभ प्राप्त करे। इसी विषय पर सम्भवतः उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी जी से चर्चा की, जैसा की उन्होंने अपने सम्बोधन में देश को अवगत कराया।

'श्रीधरीयम आयुर्वेदिक नेत्रालय एवं शोध संस्थान' में ही चिकित्सा करवा रहे धर्मेंद्र कुमार राठौर जी की माता जी को मधुमेह के कारण बायीं आँख से दिखना बंद हो गया था। एलोपैथी में इसका कोई इलाज़ न होने के कारण उन्होंने आयुर्वेद का रुख किया। अब उनकी माता जी की लगभग 70% समस्याएं समाप्त हो गई हैं। वो इसे किसी चमत्कार से कम नहीं मानते और चाहते हैं की आयुर्वेद को और अधिक प्रचारित और प्रसारित किया जाए, जिससे इस पद्धति से अनभिज्ञ रोगियों को भी लाभ मिल सके।

मंत्रालय द्वारा इसको ध्यान में रखकर हाल के वर्षों में आयुर्वेद के प्रचार प्रसार के लिये बहुत कुछ किया है।

कुथाट्टूकुलम के काउन्सिलर सुनील कुमार जी ने इस विषय पर प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त किया और कहा की राज्य एवं केंद्र सरकारों की सहायता से कुथाट्टूकुलम तेजी से विकसित होगा और आयुर्वेद को एक बार पुनः चिकित्सा की प्रमुख धारा में सम्मिलित करेगा।

वैश्विक परिदृश्य में आयुर्वेद के बढ़ते प्रभाव का अपरिवर्तनीय मार्ग

सर्बानंद सोनोवाल
(आयुष मंत्री, भारत सरकार)

देश के आयुष मंत्री सर्बानंद सोनोवाल जी ने उनमें से कुछ प्रयासों की जानकारी साझा की है ताकि वैश्विक फलक पर चमक रहे आयुर्वेद की आभा स्पष्ट होती रहे।

हाल के दिनों में आयुष मंत्रालय के प्रयासों को देश के राजनीतिक और संवैधानिक प्राधिकरणों के निम्न से लेकर उच्चतम स्तर तक से काफी सराहा गया है। मंत्रालय की स्वतंत्र पहचान सिर्फ़ 7-8 साल पहले अस्तित्व में आई थी, लेकिन स्वास्थ्य संवर्धन और उपचार की इन भारतीय प्रणालियों की अंतर्निहित शक्ति एक बहुत ही प्रतिबद्ध टीम के उत्साह और दृष्टि के साथ मिलकर शानदार वृद्धि दर्ज कर रही है, जिसने न केवल भारतीय जनता बल्कि वैश्विक मानसिकता को भी प्रभावित किया है। और यह इसके सर्वथा योग्य भी है।

आयुष क्षेत्र के शानदार विकास के चिन्ह पिछले 3-4 वर्षों के दौरान जोरदार रूप से दिखाई देने लगे हैं। मुख्य रूप से आयुर्वेद और योग की प्रभावकारिता को COVID समय के दौरान दुनिया भर में स्वीकार किया गया है। यदि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा आयुष को दूरदर्शी समर्थन और रणनीतिक मनोबल नहीं दिया जाता, तो सरकारी और गैर-सरकारी सहभागियों के माध्यम से प्राप्त हो रहा एकजुट समर्थन संभव नहीं होता और न ही आयुष की अंतरराष्ट्रीय आभा इतनी तेजी से बढ़ रही होती जो वर्तमान में चकाचौंध तक पहुंच चुकी है। संसद के संयुक्त सत्र में अपने भाषण के दौरान भारत के माननीय राष्ट्रपति के संबोधन में भारत की पूरी सरकार की भावना सही मायनों में प्रदर्शित हुई, जब उन्होंने विश्व स्वास्थ्य संगठन के पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के वैश्विक केंद्र अर्थात डब्ल्यूएचओ ग्लोबल सेंटर फॉर ट्रेडिशनल मेडिसिन (जीसीटीएम) को भारत में स्थापित करने में सरकार के प्रयासों की सराहना की।

बहुत ही कम समय में आयुष मंत्रालय ने आयुर्वेद, योग और अन्य आयुष विकल्पों को बढ़ावा देने के लिए 50 से अधिक देशों के साथ मिलकर काम करना आरम्भ किया है, यह तथ्य इस बात का प्रमाण है कि वैश्विक शिक्षा और अनुसंधान बिरादरी आयुर्वेद एवं अन्य आयुष प्रकल्पों की ताकत और प्रभावकारिता को महसूस कर रही है, विशेषतः उन सबसे चुनौतीपूर्ण स्वास्थ्य समस्याओं की पृष्ठभूमि में, जिनका मानवता वर्तमान में सामना कर रही है। विषयों की विविधता और श्रेणी, जिन पर ये पारस्परिक सहयोग आधारित हैं शुद्ध विज्ञान से लेकर अनुप्रयुक्त विज्ञान यानि एप्लाइड साइंस के भविष्य के प्रयोगात्मक क्षेत्रों तक।

कोविड के समय में आयुर्वेदिक उपायों की प्रभावशीलता ने निश्चित रूप से दुनिया को आश्वस्त किया है कि इसमें वास्तव में मानव जाति की कुछ सबसे कठिन स्वास्थ्य समस्याओं से लोहा लेने की क्षमता है। इस आश्वस्ति के व्यापक परिणाम के रूप में दुनिया के कुछ प्रसिद्ध चिकित्सा अनुसंधान संस्थानों के साथ कई सहयोगी अनुसंधान परियोजनाएं शुरू की गई हैं, जो बदलते विश्व स्वास्थ्य अनुसंधान परिदृश्य में आयुर्वेद के बढ़ते प्रभाव के बारे में बताती हैं।

जब अमेरिकन हर्बल फार्माकोपिया ने पिछले साल फार्माकोपिया कमीशन फॉर इंडियन मेडिसिन एंड होम्योपैथी (पीसीआईएमएच) के साथ डिजिटल रूप से एक पारस्परिक ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए, तो इसने एक बहुत ही महत्वपूर्ण क्रिया की नींव रखी, जिसका दूरगामी परिणाम संयुक्त राज्य अमेरिका और पूरे यूरोप दोनों में भारतीय पारंपरिक दवाओं के लिए होना निश्चित दिखाई दे रहा है। बेशक यह पारंपरिक चिकित्सा के लिए या एक समान औषधि मानकों के लिए, विश्व को एक धारणा पर आने की आवश्यकता दर्शाता है।

आयुष मंत्रालय अपने अंतरराष्ट्रीय सहयोग प्रकोष्ठ के माध्यम से विश्व स्तर पर आयुष को बढ़ावा देने के लिए विविध गतिविधियों में दृढ़तापूर्वक लगा हुआ है। अब तक आयुष मंत्रालय ने आयुर्वेद, योग और सभी आयुष प्रणालियों को बढ़ावा देने के लिए देश-दर-देश समझौता ज्ञापन, अनुसंधान सहयोग, आयुष की शैक्षणिक पीठों की स्थापना, विदेशी विश्वविद्यालय, आयुर्वेद / आयुष अस्पताल / शैक्षणिक संस्थान की स्थापना, हर्बल गार्डन की स्थापना, विशेषज्ञों का आदान-प्रदान, आयुष विशेषज्ञों की प्रतिनियुक्ति, कार्यशालाओं, सम्मेलनों आदि का आयोजन इत्यादि के लिए समझौते पर हस्ताक्षर करके 50 से अधिक देशों के साथ सहयोग किया है।

इसके अलावा, हर साल आयुर्वेद, योग, यूनानी आदि संबंधित आयुष प्रणालियों को सीखने के लिए दुनिया के विभिन्न हिस्सों से आने वाले विदेशी छात्रों को 104 सीटें आवंटित की जाती हैं।

छात्रों को भारत में आयुष प्रणाली का अध्ययन करने के लिए छात्रवृत्ति, ट्यूशन फीस, आने-जाने का हवाई किराया आदि प्रदान किया जाता है। अब तक आयुष मंत्रालय ने नेपाल, बांग्लादेश, हंगरी, त्रिनिदाद और टोबैगो, मलेशिया, मॉरीशस, मंगोलिया, तुर्कमेनिस्तान, म्यांमार, डब्ल्यूएचओ- जिनेवा जर्मनी (संयुक्त घोषणा), ईरान, साओ टोम और प्रिंसिपे, इक्वेटोरियल गिनी, क्यूबा, कोलंबिया, जापान (MoC), बोलीविया, गाम्बिया, गिनी गणराज्य, चीन, सेंट विंसेंट और द ग्रेनाडाइन्स, सूरीनाम, ब्राजील और जिम्बाब्वे इत्यादि 25 देशों के साथ पारंपरिक चिकित्सा और होम्योपैथी के क्षेत्र में सहयोग के लिए समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। इन एमओयू के तहत मंत्रालय आयुष को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियों का संचालन कर रहा है।

इसके अतिरिक्त विदेशी संस्थानों / विश्वविद्यालयों के साथ सहयोगात्मक अनुसंधान / शैक्षणिक सहयोग करने के लिए 32 समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए हैं और ऑस्ट्रेलिया, मॉरीशस, लातविया, हंगरी, स्लोवेनिया, आर्मेनिया, रूस, मलेशिया, दक्षिण अफ्रीका, बांग्लादेश, थाईलैंड आदि में विदेशी संस्थानों के साथ आयुष शैक्षणिक पीठों की स्थापना के 14 ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

इसके अतिरिक्त आयुष प्रणालियों के बारे में प्रामाणिक जानकारी प्रसारित करने के लिए 34 देशों में 37 आयुष सूचना प्रकोष्ठों की स्थापना की गई है। इन्ही आयुष सूचना प्रकोष्ठों के माध्यम से प्रतिवर्ष आयुर्वेद दिवस, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस इत्यादि भी मनाए जा रहे हैं।

आयुर्वेद शिक्षण और अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए) जामनगर में पुनः नामित विश्व स्वास्थ्य संगठन सहभागिता केंद्र (डब्ल्यूएचओसीसी) को अप्रैल 2021 से अप्रैल 2025 तक चार साल का विस्तार दिया गया है। यह सहभागिता 2013 में आयुर्वेद के क्षेत्र में आईटीआरए की विषय ज्ञान आधारित विशेषज्ञ सेवाओं और विशिष्टताओं की अधिमान्यता के रूप में शुरू हुआ था। डब्ल्यूएचओ ने पहले मई 2013 में चार साल के लिए आयुर्वेद के क्षेत्र में पारंपरिक चिकित्सा के लिए सहयोगी केंद्र के रूप में संस्थान को नामित किया था। सहभागिता की अवधि के दौरान संस्थान द्वारा दिए गए बहुमूल्य योगदान को ध्यान में रखते हुए, इसे अप्रैल 2017 से अप्रैल 2021 तक और चार वर्षों के लिए WHO सहयोगी केंद्र (WHOCC) के रूप में पुनः नामित किया गया था जिसे अप्रैल 2025 तक और बढ़ा दिया गया। इसकी परिधि के अंतर्गत आईटीआरए ने आयुर्वेद के स्वास्थ्य संवर्धन दिशानिर्देशों के युक्तिसंगत और मानकीकरण को बढ़ावा देकर, जीवनशैली जनित विकारों के लिए मानक आयुर्वेद उपचार प्रोटोकॉल का विकास,

विदेशी और राष्ट्रीय चिकित्सा कर्मियों और डब्ल्यूएचओ फेलो और अधिकारियों के लिए अभिविन्यास प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन जैसी कई गतिविधियां की हैं।

आयुर्वेद के वैज्ञानिक पहलू और साक्ष्य-आधारित उपयोग, पारंपरिक चिकित्सकों और आधुनिक चिकित्सकों के बीच संचार बढ़ाने पर क्षेत्रीय परामर्श के लिए एक आधार-पत्र का विकास, रणनीतिक उपायों का विकास और पारंपरिक दवाओं की औषधि सतर्कता को मजबूत करने के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम, पारंपरिक चिकित्सा के लिए नैदानिक अनुसंधान पद्धति पर प्रशिक्षण, "आयुर्वेद और पंचकर्म में अभ्यास के लिए डब्ल्यूएचओ बेंचमार्क" के विकास में डब्ल्यूएचओ का सहयोग भी इसमें शामिल है।

मंत्रालय कई देशों के साथ सहयोगात्मक अनुसंधान गतिविधियों में शामिल है जैसे सब-ऑप्टिमली कंट्रोल्ड टाइप 2 डाइबिटीज मेलिटस में व्यक्तिगत आयुर्वेद प्रबंधन का रैंडमाइज्ड डबल-ब्लाइंड प्लसिबो-कंट्रोल्ड क्रॉसओवर अध्ययन केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार और लाटविया विश्वविद्यालय (यूएल) एवं आर्य वैद्य फार्मेसी, बाल्टिक्स एसआईए (एवीपी) के बीच किया गया है।

विभिन्न अध्ययन शुरू किए गए हैं। केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद ने न्यूरोलॉजी और पूरक चिकित्सा विभाग, लूथरन अस्पताल, हेटिंगेन, जर्मनी के साथ भी सहकार्यता स्थापित की है। केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद और कैंसर पूरक और वैकल्पिक चिकित्सा कार्यालय (OCCAM), राष्ट्रीय कैंसर संस्थान, NIH, स्वास्थ्य और मानव सेवा विभाग, संयुक्त राज्य अमेरिका सरकार के बीच इसी आशय के पत्र पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

इस कोविड-19 महामारी ने दुनिया को रोकथाम और कल्याण के पहलू पर गंभीरता से सोचने का अवसर दिया है। "स्वास्थस्य स्वास्थ्य रक्षणम" इन दिनों समाज का आकर्षण केंद्र है। इस अवधारणा को आयुर्वेद के प्रमुख ग्रंथ चरक-संहिता में बहुत अच्छी तरह से परिभाषित किया गया है। कोविड-19 के शमन में आयुष प्रणाली के बढ़ते प्रभाव और शक्ति तथा भारत में कोविड-19 के शमन के लिए आयुष योगों पर किए गए नैदानिक परीक्षणों के परिणाम के बारे में विस्तार से बताने के लिए, मैं कुछ बातें दोहराना चाहता हूं। आयुष मंत्रालय ने संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका के विदेशी प्रतिष्ठित संस्थानों / संगठनों के सहयोग से कोविड-19 के शमन के लिए पारस्परिक रूप से चिन्हित किए गए आयुष सूत्रों पर नैदानिक परीक्षण शुरू करने की पहल की है। अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान और लंदन स्कूल ऑफ हाइजीन एंड ट्रॉपिकल मेडिसिन (एलएसएच एंड टीएम), यूके ने "यूके में कोविड-19 से स्वास्थ्य लाभ को बढ़ावा देने के लिए अश्वगंधा" पर रैंडमाइज्ड डबल-ब्लाइंड प्लसिबो-कंट्रोल्ड अध्ययन करने के लिए एक समझौते पर 22 जुलाई 2021 को हस्ताक्षर किए हैं,

जिसे मेडिसिन एंड हेल्थकेयर प्रोडक्ट्स रेगुलेटरी एजेंसी (MHRA) द्वारा विधिवत अनुमोदित किया गया है और WHO-GMP द्वारा प्रमाणित किया गया है। यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त जीसीपी (गुड क्लिनिकल प्रैक्टिस) दिशानिर्देशों के अनुसार संचालित और निगरानी की जा रही है। इसके अलावा अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान Frankfurter Innovations zentrum Biotechnologie GmbH (FIZ), फ्रैंकफर्ट जर्मनी के साथ "कोविड-19 संक्रमण का मुकाबला करने में गुडुच्यादि टैबलेट के आणविक तंत्र को समझने के लिये इन-विट्रो और इन-वीवो अध्ययन" के लिए सम्मिलित हुआ है। आयुर्वेद के क्षेत्र में सहयोग और पारस्परिक समझौते पर अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए), फ्यूचर विजन इंस्टीट्यूट और साओ पाउलो विश्वविद्यालय, ब्राजील के बीच एक त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। विश्व स्वास्थ्य संगठन और 'आयुर्वेद शिक्षण और अनुसंधान संस्थान' के बीच कार्य-प्रदर्शन के समझौते के तहत परियोजना के लिए अंतिम रूप दिया गया है - "भारत में कोविड-19 पर आयुष के हस्तक्षेप की समीक्षा करने के लिए: एक जीवित व्यवस्थित समीक्षा" (समय सीमा: 20 जनवरी 2021 से 10 अगस्त 2021 तक), जिसका अंतिम प्रारूप WHO SEARO को प्रस्तुत कर दिया गया है। आयुष मंत्रालय ने दुनिया भर में चल रहे आयुर्वेद पाठ्यक्रमों के लिए मान्यता योजना के लिए एक तंत्र विकसित किया है और जो किसी भी नियम के तहत शामिल नहीं हैं।

आयुष मंत्रालय ने दुनिया भर में चल रहे आयुर्वेद पाठ्यक्रमों के लिए मान्यता योजना के लिए एक तंत्र विकसित किया है और जो विश्व स्तर पर आयुर्वेद शिक्षा की एकरूपता और मानकीकरण लाने के लिए किसी भी नियामक निकाय के अंतर्गत नहीं आते हैं। इसके अंतर्गत मंत्रालय ने महर्षि यूरोपीय अनुसंधान विश्वविद्यालय, नीदरलैंड द्वारा संचालित आयुर्वेद और योग पाठ्यक्रमों को भी मान्यता दी है। मंत्रालय डेब्रेसेन विश्वविद्यालय, हंगरी (यूडी) में यूरोपीय आयुर्वेदिक विज्ञान संस्थान (ईआईएएस) की स्थापना के लिए संभावनाएं तलाश रहा है।

मंत्रालय ने योग और पारंपरिक चिकित्सा केंद्र, अशगबत, तुर्कमेनिस्तान में एक आयुर्वेद विशेषज्ञ को नियुक्त किया है और क्यूबा में स्थापित पंचकर्म केंद्र में एक आयुर्वेद विशेषज्ञ की प्रतिनियुक्ति की प्रक्रिया और अन्य देशों में भी इसी तरह के अवसरों की खोज करने में जुटा है। मुझे लगता है कि यह एक व्यापक विचार देने के लिए पर्याप्त है कि वैज्ञानिक आधार पर मानवता की भलाई के लिए अपनी जन्मजात क्षमता के आधार पर आयुर्वेद का विकास अपरिवर्तनीय उपेक्षा की स्थिति से महत्वपूर्णता की ओर आगे बढ़ गया है।

मिशन जल-थल

"साथियों, एक बार जब लोग मिलकर के कुछ करने की ठान लें, तो वो अद्भुत चीजें कर जाते हैं। समाज में कई ऐसे बड़े बदलाव हुए हैं, जिनमें जन-भागीदारी सामूहिक प्रयास इसकी बहुत बड़ी भूमिका रही है। "मिशन जल थल" नाम का ऐसा ही एक जन-आंदोलन कश्मीर के श्रीनगर में चल रहा है। यह श्रीनगर की झीलों और तालाबों की साफ-सफाई और उनकी पुरानी रौनक लौटाने का एक अनोखा प्रयास है। मैं इस शानदार प्रयास के लिए श्रीनगर के लोगों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। "

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(मन की बात के अपने संबोधन में)

जिला श्रीनगर में मिशन जल-थल के तहत वाटर बॉडीज के नवीनीकरण के लिए बड़े पैमाने पर काम शुरू किया गया है। मिशन जल-थल केवल गवर्नमेंट डिपार्टमेंट्स ही नहीं बल्कि सिविल सोसाइटीज और कम्युनिटी पार्टिसिपेशन को कम्प्लीटली इस प्रोजेक्ट का हिस्सा बनाने का नाम है।

इसमें खास तौर पर खुशाल सर और गिल सर दो ऐसी झीलें हैं जिनका नवीनीकरण आजादी के अमृत महोत्सव के इस मौके पर रिकॉर्ड समय में जनभागीदारी के साथ किया गया है।

एजाज असद
DC, श्रीनगर

"श्रीनगर के 'मिशन जल थल' को उजागर करने के लिए माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का आभारी हूं। हमारी खूबसूरत झीलें देश के इतिहास, संस्कृति और रीति-रिवाजों से अटूट रूप से जुड़ी हुई हैं। श्रीनगर के उपायुक्त एजाज असद और उनकी टीम द्वारा प्राकृतिक विरासत के क्षरण को रोकने और पुनर्जीवित करने के लिये के लिए उत्कृष्ट कार्य किया गया है"।

मनोज सिन्हा
जम्मू एवं कश्मीर के उपराज्यपाल

"कौन कहता है आसमां में सुराख नहीं हो सकता, एक पत्थर तो तबीयत से उछालों यारों" हिंदी गजलकार दुष्यंत कुमार की ये पंक्तियां मानव स्वभाव और प्रयासों का एक आईना हैं। अगर मिलकर प्रयास किए जाएं तो क्या नहीं हो सकता इस उक्ति को चरितार्थ और दुष्यंत कुमार जी को सही सिद्ध कर रहे प्रयास दिखाई दिए हैं श्रीनगर में।

श्रीनगर में जिला प्रशासन द्वारा वर्ष 2021 में शुरु हुआ था 'मिशन जल-थल'।

उद्देश्य था श्रीनगर के डाउनटाउन क्षेत्र में स्थित गिल सर और खुशाल सर जुड़वां झीलों का जीर्णोद्धार और कायाकल्प।

लगभग 50 साल पहले तक यह एक संपन्न पारिस्थितिकी तंत्र और एक शानदार एवं प्रमुख पर्यटन स्थल था। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में झीलों में कचरे की डंपिंग और बड़े पैमाने पर सीवेज के डाले जाने के कारण इसकी स्थिति अत्यंत ही दयनीय हो गई थी। साथ ही इस क्षेत्र के वर्षों से आतंकवाद से त्रस्त होने के कारण झीलों के क्षेत्र में पर्यटन में कमी आई तथा एक बड़े हिस्से पर अतिक्रमण कर लिया गया था।

इस स्थिति से झीलों को उबारने के लिये शुरू हुई 'जल-थल' परियोजना दो स्तंभों पर आधारित थी - *नवीनतम तकनीक का उपयोग और जन भागीदारी*। 100 दिनों के रिकॉर्ड समय में अतिक्रमण हटाने के लिए वाटर मास्टर्स जैसी नवीनतम तकनीकों का इस्तेमाल किया गया।

इस योजना के अंतर्गत पानी के प्राकृतिक प्रवाह को पुनर्जीवित करने और झीलों में जल स्तर को बढ़ाने के लिए झीलों को भरने वाले जल स्रोतों और झरनों को साफ किया गया। साथ ही सभी हितधारकों को एक साथ लाने के लिए बड़े पैमाने पर सामुदायिक जुड़ाव अभियान चलाया गया।

पुनर्स्थापन परियोजना के महत्व और लाभों के बारे में सामुदायिक जागरूकता पैदा करने के लिए स्थानीय प्रभावशाली लोगों और युवा नेताओं को 'वाटर अम्बेसडर' के रूप में नियुक्त किया गया।

जम्मू एवं कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने 'मिशन जल थल' के असाधारण प्रयासों को उजागर करने के लिए प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त किया और पर्यावरण के प्रति गहरी सांस्कृतिक संवेदनशीलता प्रदर्शित करने के लिए लोगों और श्रीनगर जिला प्रशासन की सराहना की।

Before

After

खुशाल सर और गिल सर झील का नवीनीकरण

इस योजना से क्षेत्र के इकोलॉजिकल सेक्टर में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है। झीलों से जुड़ी लगभग 60 नहरों का जीर्णोद्धार किया गया है। तकरीबन 30 वर्षों से अधिक समय के बाद, प्रवासी पक्षी इन झीलों पर लौटने लगे हैं। आने वाले दिनों में झील में कमल की खेती भी फिर से शुरू की जाएगी। कायाकल्प के बाद पर्यटन विभाग ने पर्यटकों को आकर्षित करने और इस जगह को पुनः पर्यटन केंद्र बनाने के लिए गिलकदल में एक व्यू पॉइंट विकसित किया है। इस योजना का दूरगामी लक्ष्य कश्मीर में प्राचीन जल सर्किट को डल से वुलर झील तक पुनर्जीवित कर इसे राष्ट्रीय जलमार्ग में परिवर्तित करना है।

झीलों को पुराने स्वरूप में लौटाने का यह अभियान अन्य झीलों व जल स्त्रोतों के संरक्षण की दिशा में भी कदम आगे बढ़ाने के लिए प्रेरणादायी होगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी 'मन की बात' में खुशाल सर और गिल सर झीलों का जिक्र किया जिससे हम सभी की हौसला-अफ़ज़ाई हुई है हम सभी का मकसद ये झील साफ रखना है और हम इस की खिदमत करते रहेंगे।

अब्दुर रहमान
निवासी, श्रीनगर

प्रधानमंत्री ने अपनी 'मन की बात' में खुशाल सर और गिल सर झीलों का जिक्र किया है, मैं उनका शुक्रगुजार हूँ और हमें इससे काफी हौसला भी मिला है। मैं लोगों से गुजारिश करता हूँ कि हफ्ते में कम से कम एक दिन जरूर इन झीलों का खयाल रखें।

शौकत हुसैन
निवासी, श्रीनगर

विशाखापट्टनम में चल रही स्वच्छता की एक अनोखी मुहिम

प्रधानमंत्री जी के स्वच्छता अभियान को विशाखापत्तनम के स्थानीय लोग अपने प्रयासों से सफ़ल बनाने की दिशा में प्रयासरत हैं. शहर में पॉलीथिन बैग की बजाय कपड़ों के थैलों को बढ़ावा दिया जा रहा है। यही नहीं स्थानीय लोग पर्यावरण को साफ़ रखने के लिए सिंगल यूज प्लास्टिक के ख़िलाफ़ भी अभियान चला रहे हैं। वे घरों में कचरे को अलग करने के बारे में भी जागरूकता पैदा कर रहे हैं।

जल-थल मिशन के अंतर्गत श्रीनगर में चल रहे जनांदोलन के बारे में जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

VOCAL FOR LOCAL

होली में गुजिया के साथ-साथ रिश्तों की भी अनूठी मिठास होती है। इन रिश्तों को हमें और मजबूत करना है और रिश्ते सिर्फ़ अपने परिवार के लोगों से ही नहीं बल्कि उन लोगों से भी जो आपके एक वृहद् परिवार का हिस्सा है। इसका सबसे महत्वपूर्ण तरीका भी आपको याद रखना है। ये तरीका है – 'Vocal for Local' के साथ त्योहार मनाने का। आप त्योहारों पर स्थानीय उत्पादों की ख़रीदी करें, जिससे आपके आसपास रहने वाले लोगों के जीवन में भी रंग भरे, रंग रहे, उमंग रहे।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(मन की बात के अपने संबोधन में)

होली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ओर से देश में एक नई मुहिम चलाई गई है, जिसे उन्होंने वोकल फॉर लोकल नाम दिया है। जब ये मिशन शुरू हुआ था, वोकल फॉर लोकल (Vocal for Local) शब्द लोगों के लिए नया था और देश के बहुतेरे लोगों को इसके बारे में पता नहीं था कि वोकल फॉर लोकल का अर्थ क्या है और क्या हैं इसके लाभ।

अक्सर अपने संबोधनों में वोकल फॉर लोकल का जिक्र करते प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश को यह मंत्र दिया था ताकि देश आर्थिक सुदृढ़ता की ओर बढ़ता रहे।

वोकल फॉर लोकल का प्रधान उद्देश्य है देश की अर्थव्यवस्था को मजूबत करना और देश को आत्मनिर्भर बनाना। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी देश की जनता से अनुरोध करते रहते हैं कि वो अब आत्मनिर्भर बनें और दूसरे देशों के उत्पादों पर निर्भर होना बंद कर दें। खुद से ही देश में चीजों का उत्पादन किया जाए और भारत के लोग अधिक से अधिक इन उत्पादों को ही खरीदें।

मोदी जी की वोकल फॉर लोकल प्रेरणा के कारण अब देश के लोग सस्ते विदेशी उत्पादों को खरीदने से बच रहे हैं और उन उत्पादों को खरीद रहे हैं जो कि देश में बनाए गए हैं। इस प्रकार क्षेत्रीय स्तर पर काम करने वाले छोटे उद्यमियों को न सिर्फ निरंतर प्रोत्साहन मिल रहा है, बल्कि हमारे पर्वों में छिपी प्रथाओं के आर्थिक मूल्यों का सभी को ज्ञान भी हो रहा है।

प्रधानमंत्री लगातार अपने सम्बोधनों में 'वोकल फॉर लोकल' की भावना का प्रसार करते रहते हैं। पिछले वर्ष दीपावली के पूर्व भी 'मन की बात' के अपने सम्बोधन में प्रधानमंत्री ने सभी से आग्रह करते हुए कहा था "आपको याद है न, खरीदारी मतलब 'वोकल फॉर लोकल'। आप लोकल खरीदेंगे तो आपका त्योहार भी रोशन होगा और किसी गरीब भाई-बहन, किसी कारीगर, किसी बुनकर के घर में भी रोशनी आएगी।" प्रधानमंत्री ने यकीन जताया था कि "जो मुहिम हम सबने मिलकर शुरू की है, इस बार त्योहारों में और भी मजबूत होगी।"

इसी क्रम में इस वर्ष भी होली के ठीक पहले प्रधानमंत्री का 'वोकल फॉर लोकल' के लिये देश से आग्रह न केवल हमारे सूक्ष्म, कुटीर एवं लघु उद्यमियों को संस्थापित होने में सहायक होगा बल्कि हजारों करोड़ की मुद्रा विदेशी कम्पनियों के माध्यम से भारत के बाहर नहीं जाएगी।

मेक इन इंडिया के अपने आवाहन के पश्चात आत्मनिर्भर भारत का पथ प्रदर्शित कर रहे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा लिये जा रहे ये छोटे छोटे कदम न सिर्फ भारत को आर्थिक सशक्ति की ओर ले जा रहे हैं बल्कि जनभागीदारी के बिना असंभव कार्यों में सम्मिलित होकर इस भावना को मुखर बना रही जनता इन उद्देश्यों को सफलता के शिखर की ओर ले जा रही है।

इस विषय पर जनता के विचार ये व्यक्त करते हैं कि प्रधानमंत्री जी का ये आग्रह प्रेरणा बनकर जनमन में व्याप्त हो गया है। प्रधानमंत्री के द्वारा फरवरी 22 के अपने 'मन की बात' संबोधन में इस विषय पर पुनराग्रह किए जाने पर दूरदर्शन ने जनता के मध्य जाकर इस विषय पर उनकी राय लेने का प्रयत्न किया है।

हरियाणा के कैथल में जन-जन में है उत्साह

क्षेत्र के सामान्य निवासी मानते हैं कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश की जनता के हित में वोकल फॉर लोकल का नारा दिया है, उन्होंने कहा कि यदि हम विदेशी माल ख़रीदते हैं तो हमारे देश का पैसा विदेशों में जाता है और यदि हम स्वदेशी सामान ख़रीदेंगे तो हमारे देश का पैसा हमारे देश में रहेगा।

एक नागरिक ने कहा कि वोकल फॉर लोकल से देश में व्यापार के साधन बढ़ेंगे और देश मजबूत बनेगा। कई जागरूक नागरिक अन्य लोगों से भी अपील कर रहे हैं कि प्रधानमंत्री के आग्रह पर वोकल फॉर लोकल को अपनाते हुए स्वदेशी सामान ही ख़रीदें। कैथल के दुकानदार पुलकित मित्तल और मोहित ने कहा कि हम प्रधानमंत्री की अपील पर कोई विदेशी सामान नहीं बेच रहे हैं, उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री की वोकल फॉर लोकल की अपील का आम जनता पर भी बहुत असर दिखाई दे रहा है। हर ग्राहक अब स्वदेशी सामान की ही मांग करता है। उन्होंने कहा कि यदि हम स्वदेशी सामान को बढ़ावा देंगे तो सामान बनाने से लेकर बाजार में आने तक हमारे देश में रोजगार के बहुत से अवसर बनेंगे और इन अवसरों का लाभ देश के नागरिकों को ही मिलेगा जिससे देश की जनता संपन्न होगी और देश का पैसा देश में ही रहने से देश मजबूत बनेगा। दुकानदारों ने स्पष्ट किया कि अब होली का त्यौहार आने वाला है उसको लेकर इस बार सारा सामान चाहे वह रंग, पिचकारी और अन्य सामान हों, वह सब बाजार में स्वदेशी आया है। उन्होंने कहा कि हम पूरी तरह से स्वदेशी सामान बेच रहे हैं। सामान्य जनता ने भी यह स्वीकार किया है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का वोकल फॉर लोकल का नारा पूरी तरह से देश की जनता के हित है इसलिए हम सब को स्वदेशी सामान ही बेचने और ख़रीदना चाहिए।

वोकल फॉर लोकल के प्रभाव की जमीनी स्थिती देखने हरियाणा के कैथल जिला और छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिला के बाजारों में पहुंची टीम के साथ क्षेत्रीय जनता ने इस विषय पर अपने विचार साझा किए।

जनता का जोश और उत्साह प्रधानमंत्री के इस आग्रह की सफलता को दर्शा रहा है। देश के विभिन्न हिस्सों से ऐसी सूचनाएं यह स्पष्ट करती हैं कि जनता जाग चुकी है और वो भी वोकल फॉर लोकल के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने और भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिये कमर कस चुकी है।

हमारा मिट्टी का माल यहीं पर बनता है और यहीं बिकता है, अगर हम विदेशों का सामान बिलकुल न ख़रीदें, तो हमारा पैसा देश में ही रहेगा। हम माननीय प्रधानमंत्री जी की बात से पूरी तरह सहमत हैं। उन्होंने हमारे भारत के लिए बहुत कुछ सोचा है।

मोहित
व्यापारी, कैथल

होली के त्योहार में हमारी आम जन से अपील रहेगी कि वो हिंदुस्तानी रंगों का प्रयोग करें ताकी हमारी अर्थव्यवस्था मज़बूत हो। जो हमारा व्यापारी वर्ग होगा वो ख़ुशहाल होगा और जब वो ख़ुशहाल होगा तो आम जन ख़ुशहाल होगा, तभी प्रधानमंत्री द्वारा वोकल फ़ॉर लोकल का नारा साकार रुप ले सकेगा।

हिमांशु गर्ग
निवासी, कैथल

छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव में स्वदेशी सामानों की धूम

छत्तीसगढ़ के लोगों में भी वोकल फॉर लोकल की धूम है और इस होली हर जगह इसका रंग चढ़ा हुआ है। इस बार बाज़ार में स्वदेश में निर्मित पिचकारियों का विक्रय किया जा रहा है। यहां के स्थानीय व्यापारी अतुल पाण्डे के अनुसार होली पर्व को लेकर रंग और गुलाल की दुकानें सज गईं हैं । बाज़ार में स्वदेश में निर्मित पिचकारियों की धूम तो है ही साथ ही महिला समूह द्वारा निर्मित हर्बल गुलाल की मांग भी ज़ोरों पर हैं।

रंगों के अलावा स्वदेशी पकवान भी लोगों के मुंह में पानी लाने के लिए तैयार हैं। ठेठरी, गुझिया जैसे स्वदेशी व्यंजन ना सिर्फ़ लोगों को लुभा रहे हैं बल्कि व्यापारी वर्ग भी पारम्परिक स्वदेशी व्यंजनों की बिक्री से बहुत ख़ुश है।

युवा साथियों को चाहिए कि यह मैसेज हर घर, हर व्यक्ति, हर युवा तक पहुँचे ताकि देश के सभी युवा लोकल फ़ॉर वोकल का फार्मूला अपनाते हुए अपने देश के ग़रीब लोगों को मज़बूती दें और जो लोग छोटे रोज़गार, छोटे उद्योग कर रहे हैं उनको मज़बूती मिले और वह आगे जाकर अच्छा कार्य कर पाएँ ।

संदीप कुमार
निवासी, कैथल

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

प्रतिक्रियाएँ

G Kishan Reddy @kisha... · 27/02/22

"Till the year 2013, about 13 idols came back home to India.

But, in the last seven years, India has successfully brought back more than 200 precious statues.

- PM Shri @narendramodi during #MannKiBaat.

3

Sidhant Sibal @sidhant

8th century statue of Avalokiteshwara Padamapani which belongs to Devisthan Kundulpur Temple, Bihar found in Milan, Italy. It has been missing since 2000 & was handed over to Indian consulate in Milan.

MyGovIndia @mygovind...

This #WorldRadioDay, let's celebrate Sir Jagadish Chandra Bose, the father of wireless communication & how radio has always played a pivotal role in bringing us closer, especially with our PM @narendramodi's most loved #MannKiBaat.

14 241 630

Nityanand Rai @nityana... · 27/02/22

Hon'ble PM Shri @narendramodi ji's #MannKiBaat with the Nation.

BJP @BJP4India

PM Shri Narendra Modi's #MannKiBaat...

1 3 16

Reactions

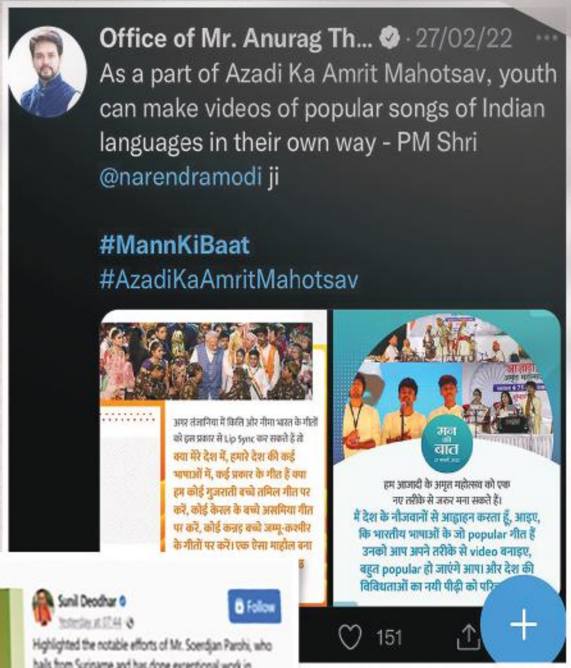
Office of Mr. Anurag Th... · 27/02/22
As a part of Azadi Ka Amrit Mahotsav, youth can make videos of popular songs of Indian languages in their own way - PM Shri @narendramodi ji
#MannKiBaat
#AzadiKaAmritMahotsav
अगर तंजानिया में किलि और नीमा भारत के गीतों को इस प्रकार से Lip Sync कर सकते हैं तो
क्या मेरे देश में, हमारे देश की कई भाषाओं में, कई प्रकार के गीत हैं क्या हम कोई गुजराती बच्चे तमिल गीत पर करें, कोई केरल के बच्चे असमिया गीत पर करें, कोई कन्नड़ बच्चे जम्मू-कश्मीर के गीतों पर करें। एक ऐसा माहौल बना
मन की बात
हम आजादी के अमृत महोत्सव को एक नए तरीके से जरूर मना सकते हैं।
मैं देश के नौजवानों से आह्वाहन करता हूँ, आइए, कि भारतीय भाषाओं के जो popular गीत हैं उनको आप अपने तरीके से video बनाइए, बहुत popular हो जाएंगे आप। और देश की विविधताओं का नयी पीढ़ी को परि
151

SOERDJAN PAROHI IN SURINAME IS DOING
Sunil Deodhar
Follow
Highlighted the notable efforts of Mr. Soerdjan Parohi, who hails from Suriname and has done exceptional work in celebrating Indian culture and traditions. #MannKiBaat
Narendra Modi
Amit Shah
J.P.Nadda
Bharatiya Janata Party (BJP)
PMO India
Ministry of Culture, Government of India
See less

Ministry of Tribal Affair... · 18/02/22
Share your ideas and suggestions for this month's 'Mann Ki Baat' programme which will take place on the 27th!
#MannKiBaat
27TH FEBRUARY 2022
MANN KI BAAT
Record your valuable inputs on Toll Free Number 1800-11-7800, or write on MyGov forum and NaMo app.
1

Harsh Sanghavi @sangh... · 26/02/22
Are you all ready to listen Hon'ble PM Shri @narendramodi Ji's #MannKiBaat?
Let's start the last Sunday of the month with his inspiring words.
Stay Tuned, tommorow 11AM onwards.
Harsh Sanghavi
PRIME MINISTER
SHRI NARENDRA MODI JI'S
MANN KI BAAT
27 FEBRUARY, SUNDAY | 11:00 AM
12
87
233

प्रतिक्रियाएँ

Er. Bishweswar Tudu @Bishwes... · 1d
Know of any extraordinary, inspirational stories about India? Share with Hon'ble PM Shri @narendramodi Ji for his upcoming #MannKiBaat episode on 27th March 2022. Dial 1800117800 or submit your stories here: mygov.in/group-issue/in...
Share inspirational stories about India with the PM!
Mann Ki Baat
on 27th March, 2022
ggestions on MyGov.in
11 7800 (Toll-Free)
s shall remain open from
5th March, 2022

Well deserved recognition by Prime Minister @PMOIndia of Kili Paul & Neema from Tanzania ;they are true cultural ambassadors of #IndiaTanzania
इन दिनों फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम पर तंजानिया की दो भाई-बहन किलि पॉल और उनकी बहन नीमा ये बहुत चर्चा में है, और मुझे पक्का भरोसा है, आपने भी, उनके बारे में जरुर सुना होगा। उनके अंदर भारतीय संगीत को लेकर एक जुनून है, एक दीवानगी है और इसी वजह से वे काफी लोकप्रिय भी हैं।
मन की बात
हाल ही में, गणतन्त्र दिवस के अवसर पर हमारा राष्ट्रगान 'जन गण मन' गाते हुए उनका वीडियो खूब वायरल हुआ था। कुछ दिन पहले उन्होंने लता दीदी का एक गाना गाकर उनको भी भावपूर्ण श्रद्धांजलि भी दी थी।
kili_paul
PMO India @PMOIndia
PM @narendramodi mentions about Kili Paul and Neema, who have who created ripples on social media by lip syncing several Indian songs. #MannKiBaat
kili_paul I'm so happy for this and thank u Sir @narendramodi I'm so mind blown to wake up to such beautiful news this inspired me a million times
#kilipaul #pmoindia #narendramodi #neemapaul #india #tanzania #maasai

Himanta Biswa Sarma · 27/02/22
A lot of attention has been paid to the promotion of Ayurveda in the country. ~ Hon PM Sri @narendramodi
#MannKiBaat
AYUSH
मन की बात
पिछले सात वर्षों में देश में आयुर्वेद के प्रचार-प्रसार पर बहुत ध्यान दिया गया है। आयुष मंत्रालय के गठन से चिकित्सा और स्वास्थ्य से जुड़े हमारे पारंपरिक तरीकों को लोकप्रिय बनाने के संकल्प को और मजबूती मिली है। मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि पिछले कुछ समय में आयुर्वेद के क्षेत्र में भी कई नए Start-up सामने आए हैं।
Ayush Startup Challenge
इसी महीने की शुरुआत में Ayush Start-up Challenge शुरू हुआ था। इस Challenge का लक्ष्य, इस क्षेत्र में काम करने वाले Start-ups को identify करके उन्हें Support करना है।
इस क्षेत्र में काम कर रहे युवाओं से मेरा आग्रह है, कि वे इस Challenge में जरुर हिस्सा लें।
7
27

Of Mines @Min... · 13/02/22
MINISTRY OF MINES
This #WorldRadioDay, let's celebrate Sir Jagadish Chandra Bose, the father of wireless communication & how radio has always played a pivotal role in bringing us closer, especially with our PM @narendramodi's most loved #MannKiBaat.
ACHARYA
JAGADISH
CHANDRA
BOSE
ON WORLD RADIO DAY
LET US CELEBRATE THE FATHER OF WIRELESS COMMUNICATION
18
44

Reactions

G Kishan Reddy @kisha... · 22/02/22

Share your ideas and suggestions for this month's #MannKiBaat - A program the Nation looks forward to.

Record your suggestions by dialling 1800-11-7800 & share them with PM Shri @narendramodi Ji or write at MyGov Forum or NaMo App.

Devendra Fadnavis @Dev_Fadnavis

महाराष्ट्राची जान मराठी
महाराष्ट्राची शान मराठी
जगाच्या कानाकोपऱ्यात आज गर्जते मराठी !

मराठी भाषा गौरवदिनाच्या सर्वांना खूप खूप शुभेच्छा...!
कविवर्य कुसुमाग्रज यांना जयंतीदिनी विनम्र अभिवादन !
#मराठीराजभाषादिन
#मायमराठी

Dr. Ramesh Pokhriyal Nis... @DrRPNishank

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!
यह अत्यंत गर्व का विषय है कि यशस्वी प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी द्वारा संस्तुत #NEP2020 में हमारे देश की सभी मातृभाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन पर विशेष बल दिया गया है।

Office of Tejasvi Surya

From 13 idols until 2013, in the last 7 years, PM Sri @NarendraModi govt has brought back 200+ precious idols to India

This speaks of the man's commitment to Sanatana Dharma

#MannKiBaat

1/n

14 · 158 · 1,057

Show this thread

Office of Tejasvi Surya · 27/02/22

Women are dispelling old myths & reaching newer heights in diverse fields

Initiatives of PM Sri @narendramodi govt. has brought social changes through decisions on common age for marriage, #TripleTalaq, access to sainik schools & #BetiBachaoBetiPadhao campaign

#MannKiBaat

5/n

Bhupender Yadav @bya... · 27/02/22

Listening to PM Shri @narendramodi ji's #MannKiBaat at the @BJP4Delhi office today.

14 · 103 · 433

प्रतिक्रियाएँ

Arjun Ram Meghwal @a... · 25/02/22

This month's 'Mann Ki Baat' will take place on the 27th! #MannKiBaat

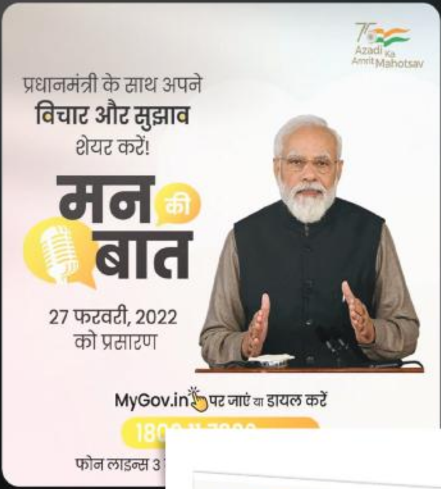

2 9

Sunil Deodhar

Follow

Highlighted the notable efforts of Mr. Soerdjan Parohi, who hails from Suriname and has done exceptional work in celebrating Indian culture and traditions. #MannKiBaat

Narendra Modi
Amit Shah
J.P.Nadda
Bharatiya Janata Party (BJP)
PMO India
Ministry of Culture, Government of India
See less

Dr. Ramesh Pokhr...

एक बार जब लोग मिलकर के कुछ करने की ठान लें, तो वो अद्भुत चीजें कर जाते हैं।

'मिशन जल थल' नाम का एक जन आंदोलन कश्मीर के श्रीनगर में चल रहा है।

यह श्रीनगर की झीलों और तालाबों की साफ-सफाई और उनकी पुरानी रौनक लौटाने का एक अनोखा प्रायास है।

#MannKiBaat

2 4 34

Sourabh Choudhary @... · 27/02/22

Just like the sibling duo of Kili & Neema, I urge everyone,especially kids from different states to make lip-syncing videos of popular songs (from a state different than theirs). We'll redefine 'Ek Bharat Shreshtha Bharat' & popularise Indian languages: @narendramodi #MannKiBaat

6 174 227

Take pride in mother tongue, says Modi in Mann ki Baat

PRESS TRUST OF INDIA
New Delhi, 27 February

Prime Minister (PM) Narendra Modi on Sunday called upon youngsters to make videos of famous Indian songs in different languages that will not only make them popular but also showcase the country's diversity to the new generation.

In his monthly Mann Ki Baat broadcast, Modi highlighted a number of issues, including the cases of triple talaq going down by over 80 percent following a law banning the practice, and also urged people to develop scientific temperament among children. "Even after 75 years of Independence, there are people who have dilemmas and reservations regarding their language, dress, food and drink, whereas it is not like this anywhere else in the world," Modi said.

People should speak their language with pride, he said, adding India is incomparable in its richness of languages.

"As a part of Azadi Ka Amrit Mahotsav, youth can make videos of popular songs of Indian languages in their own way," he said, adding that people of one state making videos with songs of another state will make them experience "Ek Bharat, Shreshtha Bharat" (One India, great India). "I would emphasise about mother tongue that as our mother moulds our life, in the same manner, mother tongue also shapes our life.

"The mother and mother tongue, both together strengthen the foundation of life, lending it permanence. Just like we cannot abandon our mother, similarly, we cannot leave our mother tongue either," Modi said.

The world's oldest language Tamil is in India and every Indian should be proud of this significant heritage, he said. In the same way, many ancient scriptures have found expression inSanskrit, the PM added in his monthly address.

Take pride in Tamil, says Modi

PM stresses language diversity of India

DEVESH K. PANDEY
NEW DELHI

> **Our India is so rich in terms of languages that it is incomparable**

Prime Minister Narendra Modi on Sunday said every Indian should be proud of Tamil, the world's oldest living language.

Emphasising the importance of the mother tongue in his *Mann Ki Baat* radio show, Mr. Modi said, "The mother and mother tongue both together strengthen the foundation of life, lending it permanence. Just like we cannot abandon our mother, similarly, we cannot leave our mother tongue either."

"Our India is so rich in terms of languages that it is incomparable ... hundreds of languages, thousands of dialects are different from each other but are mutually integrated... many languages, one expression," he said.

He said the country was proud to be associated with 121 forms of mother tongues, 14 of which are spoken by over one crore people in everyday life.

In 2019, Hindi was ranked third among the most spoken languages of the world. "Every Indian should be proud of this, too," Mr. Modi said, highlighting the contribution of Surjan Parohi, a famous Hindi poet from Suriname, whose forefathers had gone there along with thousands of workers to earn a living.

Indian music

During his address, Mr. Modi praised two Tanzanian siblings, Kili Paul and his sister Nima, who were passionate about Indian music. A few days ago, Kili was honoured at the Indian Embassy in Tanzania.

Talking about the growing influence of Ayurveda, the Prime Minister said the former Kenyan Prime Minister Raila Odinga's daughter had almost lost her eyesight to a surgery for brain tumour. Having tried everywhere else, he finally got her treated at an Ayurvedic hospital in Kerala. Her eyesight returned to a great extent. Mr. Odinga now wanted to introduce Ayurveda in Kenya.

Referring to International Women's Day on March 8, Mr. Modi said women in the country were taking the lead role in every sector.

"Last month, on Republic Day, we saw that daughters were flying modern fighter planes too. The country also lifted the restrictions on the admission of daughters in Sainik Schools...about half the start-ups have women in director roles," he said.

In the recent past, decisions like increasing maternity leave were taken. The country was trying to give equal rights to sons and daughters by fixing a common age for marriage.

The Prime Minister, ahead of National Science Day on February 28, paid tribute to C.V. Raman. He urged people to instil scientific temperament in children.

ମନ୍ କୀ ବାତ୍: ସ୍ୱଚ୍ଛ ଭାରତ ଅଭିଯାନରେ ଲୋକଙ୍କ ଯୋଗଦାନକୁ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ପ୍ରଶଂସା

ନୂଆଦିଲ୍ଲୀ, ୨୭/୨: ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ନରେନ୍ଦ୍ର ମୋଦୀ ରବିବାର ତାଙ୍କ ମନ୍ କୀ ବାତ୍ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମରେ ସ୍ୱଚ୍ଛ ଭାରତ ଅଭିଯାନରେ ଲୋକଙ୍କ ଯୋଗଦାନ ତଥା ପଲିଥିନ ବଦଳରେ କନା ବ୍ୟାଗର ବ୍ୟବହାରକୁ ଖୁବ୍ ପ୍ରଶଂସା କରିଥିଲେ। ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ ୮୬ତମ ମନ୍ କୀ ବାତ୍ ରେଡିଓ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମରେ କହିଲେ ଯେ, ରାଜସ୍ଥାନର ସୱାଇ ମାଧୋପୁରରେ ସେ ଲୋକମାନଙ୍କର ଏକ ପ୍ରେରଣାଦାୟୀ ପ୍ରଚେଷ୍ଟା ଦେଖିଛନ୍ତି। ରଣଥମ୍ବୋରଠାରେ ଯୁବକମାନେ 'ପ୍ଲାଷ୍ଟିକ୍-ମୁକ୍ତ ଅଭିଯାନ' ଆରମ୍ଭ କରିଛନ୍ତି। ରଣଥମ୍ବୋର ଜଙ୍ଗଲରୁ ସେମାନେ ପ୍ଲାଷ୍ଟିକ୍ ଜରି ଆଦି ଗୋଟାଇ ସଫା କରୁଛନ୍ତି। ଏପରି ସାମୂହିକ ଉଦ୍ୟମ ଅନ୍ୟ ଲୋକମାନଙ୍କୁ ମଧ୍ୟ ପ୍ରେରଣା ଦେଉଛି। ସବୁ ଲୋକ ଯଦି ଦେଶକୁ ସ୍ୱଚ୍ଛ, ନିର୍ମଳ ଓ ପ୍ଲାଷ୍ଟିକ୍ ଆବର୍ଜନା-ମୁକ୍ତ କରିବାକୁ ଉଦ୍ୟମ କରିବେ ତେବେ ଆମେ ଭାରତକୁ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ସ୍ୱଚ୍ଛ କରିଦେଇପାରିବା ବୋଲି ସେ କହିଥିଲେ। ସେ ପୁଣି କହିଲେ ଯେ, ବିଶାଖାପାଟଣାଠାରେ ସ୍ୱଚ୍ଛ ଭାରତ ଅଭିଯାନରେ ପଲିଥିନ୍ ବ୍ୟାଗ୍ ବଦଳରେ କନା ବ୍ୟାଗର ବ୍ୟବହାରକୁ ଗୁରୁତ୍ୱ ଦିଆଯାଉଛି। ସ୍ଥାନୀୟ ଲୋକମାନେ ଏକମାତ୍ର-ବ୍ୟବହାରଯୋଗ୍ୟ ପ୍ଲାଷ୍ଟିକ୍ ବିରୋଧରେ ଅଭିଯାନ ଚଳାଉଛନ୍ତି। ଏହା ଅତ୍ୟନ୍ତ ପ୍ରଶଂସନୀୟ ବୋଲି ମୋଦୀ କହିଥିଲେ।

भारत से चोरी 14 धरोहरें आस्ट्रेलिया से आ रहीं वापस

वी के शुक्ला● नई दिल्ली

आस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय कला संग्रहालय (एनजीए) में रखीं भारत की 14 धरोहरें वापस आ रही हैं। इनमें पीतल और पत्थर की मूर्तियों के अलावा पेंटिंग व कुछ तस्वीरें भी शामिल हैं। ये धरोहरें 1989 से 2009 के बीच एनजीए के पास पहुंची थीं। ये इनकी तस्करी करने वाले सुभाष कपूर के माध्यम से वहां पहुंची थीं। अभी जो धरोहरें वापस आ रही हैं उनमें भगवान की मूर्तियां भी हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआइ) का कहना है कि ये धरोहरें आस्ट्रेलिया से भेजी जा रही हैं। इनके एक माह के अंदर दिल्ली पहुंचने की उम्मीद है।

इनके एक माह के अंदर दिल्ली पहुंचने की है उम्मीद, इसमें पीतल और पत्थर की मूर्तियों के अलावा पेंटिंग व कुछ तस्वीरें भी शामिल हैं

यह चौथी बार है जब एनजीए ने कपूर से खरीदी धरोहरें भारत सरकार को लौटाई हैं। इनमें कांसे या पत्थर की छह मूर्तियां, पीतल की मूर्ति और छह तस्वीरें आदि शामिल हैं। आस्ट्रेलिया और भारत के अच्छे संबंधों का ही परिणाम है कि आस्ट्रेलिया अपने खर्च पर इन धरोहरों को वापस लौटा रहा है। भारत में पहुंचने पर इन मूर्तियों और तस्वीरों का एएसआइ अध्ययन कराएगा। यह भी पता लगाया जाएगा कि ये धरोहरें कहां से चोरी की गई थीं।

एनजीए ने कपूर की आर्ट आफ पास्ट गैलरी की 22 कलाकृतियों के लिए पिछले कुछ वर्षों में 1.7 करोड़ डालर खर्च किए। इसमें 11वीं सदी की चोल कालीन कांसे की मूर्ति शिव नटराज भी शामिल थी। जब भारतीय पुलिस ने 2012 में कपूर को गिरफ्तार किया तो चुराई गई धरोहरों में शिव की नटराज की मूर्ति को भी सूचीबद्ध किया गया। इस मूर्ति को दक्षिण भारत में एक मंदिर से चुराया गया था। जिसे 2014 में तत्कालीन आस्ट्रेलियाई पीएम टोनी एबाट ने भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को सौंपा था। सुभाष कपूर को इंटरपोल ने 2011 में जर्मनी में गिरफ्तार किया था और उसे 2012 में भारत लाया गया। आजकल वह तमिलनाडु की जेल में बंद हैं।

PM lauds Vizag's cloth bag efforts

Visakhapatnam: Prime Minister Narendra Modi in his 'Mann Ki Baat' address on Sunday lauded the efforts of Vizagites in embracing the cloth bag culture instead of polythene bags. The Prime Minister also mentioned the intense garbage segregation efforts being carried out in Vizag.

"People here are campaigning against single use plastic products to keep the environment clean. People are also spreading awareness to segregate the waste at home," said Modi in 'Mann Ki Baat'. TNN

MANN KI BAAT

Triple talaq a 'social evil', 80% drop in cases since law enacted: PM Modi

EXPRESS NEWS SERVICE
NEW DELHI, FEBRUARY 27

TERMING TRIPLE talaq a "social evil", Prime Minister Narendra Modi on Sunday said that there has been a drastic 80 percent decrease in such cases since a law was enacted against the practice in September 2019.

In his monthly 'Mann Ki Baat' programme, the PM, while underlining the "success" of the government's programmes for women empowerment, said, "In the recent past, decisions like increasing maternity leave for women have been taken. We are trying to give equal rights to sons and daughters by fixing a common age for marriage," he said, adding that due to this the participation of women in every field is increasing.

"Take the success of 'Beti Bachao, Beti Padhao'... today the sex ratio in the country has improved. The number of girls going to school has also improved. In this, we also have a responsibility that our daughters do not drop out of the school. Similarly, women in the country have got freedom from open defecation under the 'Swachh Bharat Abhiyan'," Modi added.

All this, he said, was possible in such a short span of time because women themselves were leading the change in the country.

The PM also appreciated the role of Indian scientists in the fight against the coronavirus, saying, "Due to their hard work, it was possible to manufacture a made-in-India vaccine which helped the whole world a lot. This is the gift of science to humanity."

Flagging the issue of smuggling of antique idols out of India, Modi, referring to the country's history of making idols, said, "Not only were they a wonderful artistic example of Indian sculpture but our faith was also connected with them. It is our responsibility towards Mother India to bring home these idols. They idols embody a part of the soul of India."

India, he claimed, has created a deterrent fear against the tendency to steal and the countries where these idols were taken away to also started to feel that it could have immense repercussions in diplomatic relations with India. "This is an example of the changing global outlook towards India. Till 2013, just 13 idols were brought back to India. But in the last seven years, India has successfully brought back more than 200 precious idols," he said.

The PM also praised Tanzanian lip sync artists Kili Paul and his sister Neema Paul. "Recently, a video of Kili singing our National Anthem on the occasion of Republic Day went viral" and "a few days ago he also paid a soulful tribute to Lata Mangeshkar by presenting her song," he said.

Appealing to the country's youth to make videos of popular songs of Indian languages in their own way, the Prime Minister said, "You will become very popular! And the diversity of the country will be introduced to the new generation."

Prime Minister Modi also emphasised the importance of one's mother tongue, saying "as our mother moulds our life so does our mother tongue. Just like we cannot abandon our mother, we cannot leave our mother tongue either."

MANN KI BAAT

Modi asks start-ups to use their skills, scientific character for nation building

OUR BUREAU

New Delhi, February 27

Prime Minister Narendra Modi on Sunday asked the start-ups in the country to use their skills and scientific character for "nation building".

Addressing the 86th episode of his monthly radio programme Mann Ki Baat, Modi underscored that this is also "our collective scientific responsibility towards the country". Hailing the efforts of start-ups in the field of "virtual reality", Modi also called upon them – in the era of virtual classes – to set up a "virtual lab" keeping in mind the considerations of children.

Scientific temperament

"Through virtual reality, we can also make children experience chemistry lab at home. I urge teachers and parents to encourage students and children to ask questions and look for answers along with them," he said.

Prime Minister Narendra Modi

Meanwhile, on the occasion of the National Science Day, which falls on February 28, Modi asked families to develop "scientific temperament" in their children. "Friends, technology has made our life easier and simple. Which technology is good and how to make better use of a particular technology, we are familiar with all these. But it is also true that we don't pay attention to apprise children in our family as to what is the basis of that technology, what is the science behind it," Modi said. He suggested that scientific issue be discussed at home and noted that it is possible to explain the science behind several issues in everybody's daily lives.

Modi appreciated the role of Indian scientists in the fight against Covid-19.

"It is because of their hard work that the production of made in India vaccine was possible, which has helped the entire world. This is the gift of science to humanity," he said.

Modi said that India has been successful in bringing back invaluable artefacts. "After 2014, India brought back over 200 precious idols from nations like the US, Britain and Canada," Modi said.

MANN KI BAAT

'India doing its best to fly stolen antiques back'

EXPRESS NEWS SERVICE @ New Delhi

INDIA has been successful in bringing back over 200 stolen antiquities and idols in the last seven years, PM Narendra Modi said on Sunday.

"The history of each of our idols also depicts the influence of their times. Not only they are a wonderful artistic example of Indian sculpture; our faith is also connected with them. But, in the past, many idols were stolen and kept being taken out of India," the PM said in his radio programme 'Mann Ki Baat', adding that it has become the responsibility of government to bring back all the stolen idols and antiques.

"Till 2013, nearly 13 idols had been brought back to India. But, in the last seven years, India has successfully brought back more than 200 precious idols. Many countries such as America, Britain, Holland, France, Canada, Germany, Singapore have understood the sentiment of India and helped us to retrieve these idols."

The PM highlighted the return of an idol of Avalokiteshvara Padmapani from Italy that was stolen from Kundalpur temple in Bihar's Gaya district. Another case was the 700-year idol of Lord Anjaneyaa Hanuman – stolen from Vellore in Tamil Nadu – that was brought from Australia.

Modi also outlined the importance of mother language in the context of the recently celebrated International Mother Language Day (Feb 21). Indians are proud to be associated with 121 forms of mother tongues and 14 of these languages are spoken by more than 1 crore people, he said.

Speak mother tongue with pride: PM in Mann Ki Baat

New Delhi, Feb. 27: Prime Minister Narendra Modi on Sunday called upon youngsters to make videos of famous Indian songs in different languages that will not only make them popular but also showcase the country's diversity to the new generation. Modi praised Tanzanian siblings Kili Paul and Neema who, he said, have created ripples on social media by lip-syncing several Indian songs, including the country's national anthem on Republic Day.

In his monthly Mann Ki Baat broadcast, the PM highlighted a number of issues, including the cases of triple talaq going down by over 80 percent following a law banning the practice, and also urged people to develop scientific temperament among children.

Even after 75 years of Independence, there are people who have dilemmas and reservations regarding their language, dress, food and drink, whereas it is not like this anywhere else in the world, Mr Modi said.

People should speak their language with pride, he said, adding India is incomparable in its richness of languages.

With the International Mother Language Day being observed recently, Modi referred to Tanzanian Kili Paul and his sister Neema and spoke of their passion for Indian songs, including their tribute to legendary singer Lata Mangeshkar. — *PTI*

The Indian EXPRESS

Cases of triple talaq decreased by 80 per cent after enactment of law: PM Modi in Mann Ki Baat

THE ECONOMIC TIMES

Mann ki Baat: PM Modi lauds Tanzania's Internet sensations Kili and Neema Paul

THE TIMES OF INDIA

Vizag's cloth bag finds a mention in PM Narendra Modi's Mann Ki Baat

Business Standard

Take pride in mother tongue, says PM Narendra Modi in 'Mann ki Baat'

DH DECCAN HERALD

Role of Indian scientists in fight against Covid-19 is praiseworthy: Modi

TIMES NOW

Mann Ki Baat: India successfully brought back over 200 invaluable artifacts in last 7 years, says PM Narendra Modi

abp LIVE

Mann Ki Baat | 'Bhasha Anek, Bhaav Ek', PM Modi Asks Indians To Take Pride In Country's Linguistic Diversity

JAGRAN English

Mann Ki Baat: Languages preserve culture and heritage, says PM Modi | As it happened

ON AIR